वर्ष : 2021-22
अंक : 04

आईपी
वीआईपी

सूरत तरंग

राजभाषा विशेषांक

उप क्षेत्रीय कार्यालय
कर्मचारी राज्य बीमा निगम
द्वितीय तल, समर्थ हाउस, पाल लेक के सामने,
अडाजन-पाल, सूरत (गुजरात) पिन-394510
दूरभाष : 0261-2730124-29, ई-मेल : dir-surat@esic.nic.in

संरक्षक

मनोज कुमार

उप निदेशक (प्रभारी)

संपादक

मनीष कुमार

उप निदेशक (राजभाषा प्रभारी)

सह-संपादक

अमित इन्दौरिया

वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी

प्रकाशक

उप क्षेत्रीय कार्यालय

कर्मचारी राज्य बीमा निगम

द्वितीय तल, समर्थ हाउस, पाल लेक के सामने,

अडाजन-पाल, सूरत (गुजरात) पिन-394510

दूरभाष : 0261-2730124-29, ई-मेल : dir-surat@esic.nic.in

पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं की मौलिकता, उनमें व्यक्त विचार एवं तथ्यों का उत्तरदायित्व संबन्धित रचनाकारों का है । इनमें संपादकीय या विभागीय सहमति आवश्यक नहीं है ।

क.रा.बी.नि.
चिंता से मुक्ति

कर्मचारी राज्य बीमा निगम
EMPLOYEES' STATE INSURANCE CORPORATION
पंचदीप भवन, सी.आई.जी. मार्ग, नई दिल्ली-110002
PANCHDEEP BHAWAN, C.I.G. MARG, NEW DELHI-110002
WEBSITE : www.esic.nic.in. • www.esic.india.org

मुखमीत सिंह भाटिया(भा.प्र.से.)
महानिदेशक

सं. ए-49/17/ 01/2016-रा.भा.
दिनांक : 29.07.2021

संदेश

यह अत्यंत प्रसन्नता का विषय है कि उप क्षेत्रीय कार्यालय, सूरत की राजभाषा के प्रति रूचि की परिचायक हिन्दी गृह–पत्रिका 'सूरत तरंग' के चतुर्थ अंक का प्रकाशन किया जा रहा है | आशान्वित हूँ कि यह अंक कार्यालय की विभिन्न गतिविधियों का परिचय कराने के साथ ही विविध–विषयक लेखों के माध्यम से अपने कार्मिकों के रचनात्मक गुणों को प्रखरता से उभारने में सफल रहेगा |

शुभकामनाओं सहित,

29/7/21
(मुखमीत सिंह भाटिया)

मनोज कुमार,
उप निदेशक (प्रभारी)
उप क्षेत्रीय कार्यालय
क.रा.बी.निगम
सूरत

क.रा.बी.नि.
चिंता से मुक्ति

कर्मचारी राज्य बीमा निगम
EMPLOYEES' STATE INSURANCE CORPORATION
पंचदीप भवन, सी.आई.जी. मार्ग, नई दिल्ली-110002
PANCHDEEP BHAWAN, C.I.G. MARG, NEW DELHI-110002
WEBSITE : www.esic.nic.in. • www.esic.india.org

संध्या शुक्ला, भा.ले. एवं ले.से.
वित्त आयुक्त

संख्या : ए-49/17/2/2016-रा.भा.
दिनांक : 17.03.2021

संदेश

उप क्षेत्रीय कार्यालय, सूरत की हिंदी गृह-पत्रिका 'सूरत तरंग' के चतुर्थ अंक के लिए बधाई। पत्रिका का प्रकाशन कार्मिकों की साहित्यिक प्रतिभा के साथ-साथ राजभाषा हिंदी के प्रति उनके प्रेम को भी प्रकट करता है। आशा है गृह-पत्रिका का यह अंक कार्यालय में हिंदी की प्रगति के मार्ग को प्रशस्त करेगा।

पत्रिका के संपादक मण्डल सहित सभी रचनाकारों को शुभकामनाएं।

संध्या
(संध्या शुक्ला)

श्री मनोज कुमार
उप निदेशक(प्रभारी)
उप क्षेत्रीय कार्यालय
कर्मचारी राज्य बीमा निगम
सूरत।

क.रा.बी.नि.
चिंता से मुक्ति

कर्मचारी राज्य बीमा निगम
EMPLOYEES' STATE INSURANCE CORPORATION
पंचदीप भवन, सी.आइ.जी.मार्ग, नई दिल्ली-110002
PANCHDEEP BHAWAN, C.I.G. MARG, NEW DELHI-110002
WEBSITE : www.esic.nic.in • www.esic.india.org

मनोज कुमार शर्मा
बीमा आयुक्त (राजभाषा)

संख्या : ए-49/17/1/2016-रा.भा.
दिनांक : 16.03.2021

संदेश

यह जानकर खुशी हुई कि उप क्षेत्रीय कार्यालय, सूरत अपनी हिंदी गृह-पत्रिका 'सूरत तरंग' के चतुर्थ अंक का प्रकाशन करने जा रहा है। पत्रिका का अनवरत प्रकाशन राजभाषा हिंदी की प्रगति के लिए कार्यालय कर्मियों के समन्वित प्रयासों का एकाकार रूप है। आशा है कि पत्रिका जनमानस के हृदय में हिंदी को स्थापित कराने में सहायक सिद्ध होगी।

इन्हीं शुभकामनाओं के साथ.....

म शर्मा
(मनोज कुमार शर्मा)

श्री मनोज कुमार
उप निदेशक(प्रभारी)
उप क्षेत्रीय कार्यालय
कर्मचारी राज्य बीमा निगम
सूरत।

संरक्षक की कलम से..

मानव प्रजाति की प्रगति परस्परिक सम्प्रेषण की क्षमता के विकास के साथ बढ़ती गयी है । भाषा, विचारों और मन के भावों को प्रत्यक्ष रूप से प्रकट करने का सबसे प्रभावी माध्यम है । वर्तमान परिदृश्य में हिन्दी एक भाषा मात्र नहीं है बल्कि यह हमारे देश का एक संपर्क सूत्र है जो सम्पूर्ण देश को एक सूत्र में पिरोने का कार्य कर रही है । यह भारत के विविधभाषी जनसमूह की अभिव्यक्ति का एकमात्र माध्यम है । यह सरकार द्वारा प्रायोजित विभिन्न कल्याणकारी योजनाओं को जन-जन तक पहुंचाने का सर्व-सिद्ध माध्यम भी है । विशेषतः कर्मचारी राज्य बीमा निगम जैसे सामाजिक सरोकार से जुड़े संगठन में जन-मानस से जुड़ने के लिए हिन्दी भाषा से बेहतर भाषायी माध्यम और कोई हो नहीं सकता । सूचना प्रौद्योगिकी के भाषायी क्षेत्र में किए गए प्रयासों से हिन्दी भाषा को भी कंप्यूटर में स्थान मिला जिससे हिन्दी के प्रचार-प्रसार को व्यावहारिक रूप से गति मिली है ।

उप क्षेत्रीय कार्यालय, सूरत द्वारा प्रकाशित की जा रही हिन्दी गृह पत्रिका 'सूरत तरंग' एक हिन्दी में लिखित रचनाओं का संग्रह मात्र नहीं है बल्कि यह इस कार्यालय के सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों की रचनात्मक अभिव्यक्ति का माध्यम भी है । यह उनके हिन्दी भाषा के प्रति रूझान एवं लगाव को सशक्त रूप से प्रदर्शित करती है ।

यह कार्यालय निगम के सामाजिक सरोकारों की सफल निष्पति के साथ-साथ संघ की राजभाषा नीति के सैद्धान्तिक एवं व्यावहारिक कार्यान्वयन के प्रति पूर्णतः कटिबद्ध है । हिन्दी गृह-पत्रिका 'सूरत तरंग' का यह चतुर्थ संस्करण आपके समक्ष रखते हुए अत्यंत प्रसन्नता की अनुभूति हो रही है । संपादक मण्डल के साथ-साथ सभी रचनाकारों को पत्रिका प्रकाशन में दिए गए बहुमूल्य योगदान के लिए हार्दिक साधुवाद ।

आशा है कि पत्रिका का यह अंक आपको पसंद आएगा । हमें आपके बहुमूल्य सुझावों का इंतजार रहेगा ।

मनोज कुमार
उप निदेशक (प्रभारी)

संपादक की कलम से..

मानव जीवन परिवर्तनशील है । इस नश्वर जीवन में यदि कुछ चिर-स्थायी है तो वह है व्यक्ति के विचार और विचारों को अभिव्यक्त करने का प्रखर माध्यम है- भाषा । विचारों का प्रभाव कई युगों तक रह सकता है ।

किसी भी स्वाधीन देश के लिए, जो महत्त्व उसके राष्ट्रीय ध्वज और राष्ट्र-गान का है, वही उसकी राजभाषा का है। प्रजातांत्रिक देश में जनता और सरकार के बीच भाषा की दीवार नहीं होनी चाहिए और शासन का काम जनता की भाषा में किया जाना चाहिए। जब तक विदेशी भाषा में शासन होता रहेगा, तब तक कोई देश सही अर्थों में स्वतंत्र नहीं कहा जा सकता। प्रत्येक व्यक्ति अपनी भाषा में ही स्पष्टता और सरलता से अपने विचारों को अभिव्यक्त कर सकता है। नूतन विचारों का स्पंदन और आत्मा की अभिव्यक्ति, मातृभाषा में ही सम्भव है। हिन्दी भाषा ने देश के भिन्न-भिन्न भागों को एक सूत्र में पिरोने का कार्य किया है । इसके माध्यम से जनता न केवल अपने देश की नीतियों और प्रशासन को भली-भांति समझ सकती है, बल्कि उसमें स्वयं भी भाग ले सकती है ।

वर्तमान सूचना प्रौद्योगिकी के युग में हिन्दी भाषा के बिना सम्पूर्ण देश के लोगों को इन्टरनेट से जोड़ना संभव नहीं है । इसी वजह से अब इन्टरनेट की दुनिया ने हिन्दी को आधिकारिक भाषा के रूप में अपना लिया है जिससे हर भारतीय इन्टरनेट से जुड़ रहा है । सोशल मीडिया के विभिन्न माध्यमों जैसे – फेसबुक, ट्वीटर, व्हाट्सअप आदि ने भी हिन्दी भाषा की महत्ता स्वीकार करते हुए अपने उपभोक्ताओं को हिन्दी का प्रयोग करने की सुविधा दी है ।

कार्यालयकर्मियों की हिन्दी के प्रति रूचि एवं उनकी रचनात्मकता का साकार रूप तथा विविध विषयक साहित्यिक रचनाओं से सरोबार हिन्दी गृह-पत्रिका 'सूरत तरंग' का चतुर्थ संस्करण आपको प्रस्तुत करते हुए अत्यंत गौरवान्वित हूँ । सभी रचनाकारों का हृदय से आभार । कृपया अपने बहुमूल्य सुझावों से हमें अवश्य अवगत कराएं ताकि पत्रिका को और अधिक रोचक एवं सार्थक बनाया जा सके ।

मनीष कुमार
उप निदेशक (राजभाषा प्रभारी)

अज्ञान-तिमिर की यवनिका गिरा दे,
ज्ञान-विवेक का आलोक फैला दे,
ज्योतिर्मय कर दे ।
वर दे..

मूढ़ता का अंधकार मिटा दे,
मन में नवज्योत जला दे,
सद्‌चित्त कर दे ।
वर दे..

जगत के भेद मिटा दे,
शुचिता की पहचान करा दे,
सर्वोदय कर दे ।
वर दे..

सत्यम-शिवम-सुंदरम साकार कर दे,
स्व-विश्वास मन में भर दे,
आत्मदर्शन कर दे ।
वर दे..

अमित इन्दौरिया
वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	रचना	रचनाकार	पृष्ठ सं.
1	भाग्य का निर्माता कौन	वासुदेव पारवानी, उप निदेशक	10
2	मि एसिक बोलतोय..	श्याम बी. हेडावू, अधीक्षक	11
3	हिन्दी की प्रासंगिकता एवं महत्त्व	अमित इन्दौरिया, वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी	13
4	यात्रा वृत्तांत – गंगटोक (सिक्किम)	विक्रम दायमा, अधीक्षक	16
5	पिता	गुप्तेश्वर प्रसाद, अधीक्षक	18
6	स्वास्थ्य की भूमिका	साहिल नारंग, शाखा प्रबन्धक	20
7	याद आती तो होगी, माँ	पंकज कुमार, सहायक	21
8	कार्य के प्रति लगन	रणविजय कुमार, सहायक	22
9	मजदूर हूँ साहब मजबूर नहीं	ओमप्रकाश प्रजापत, प्रवर श्रेणी लिपिक	23
10	विचारों से बनता है संसार	रजनीश कुमार राजन, सहायक	24
11	कैसा है भारत एवं कैसा है भारत का संविधान	हेमाराम गहलोत, सहायक	26
12	नयी रोशनी	नीलम कुमारी, सहायक	27
13	माँ	ओमप्रकाश प्रजापत, प्रवर श्रेणी लिपिक	30
14	बेटियों का नसीब	मनमोहन मीना, सहायक	30
15	पत्रकारिता के बदलते स्वरूप	शैलेश कुमार दास, सहायक	31
16	तेरे आने की राह	रजनीश कुमार राजन, सहायक	33
17	घर की याद	रणविजय कुमार, सहायक	33
18	ईएसआईसी : चिंता से मुक्ति (नाटक)	विमलेशकुमार ठक्कर, सहायक	34
19	मंदिर है माँ का निराला	राकेश कुमार मीना, प्रवर श्रेणी लिपिक	37
20	पर्यावरण का बचाव	आशीष चक्रवर्ती, प्रवर श्रेणी लिपिक	37
21	आत्महत्या किसी समस्या का समाधान नहीं	रमेश कुमार, सहायक	38
22	आज का समय	भावना सोलंकी	39
23	वक्त नहीं, अरमान	नरेश कुमार मीना, प्रवर श्रेणी लिपिक	40
24	दासवृत्ति को सभ्यता की पहचान मत बनाइए	राम सिंह भाटी, अवर श्रेणी लिपिक	41
25	हसरतें, वह आवाज	अमित इन्दौरिया, वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी	43
26	राष्ट्र निर्माण	गोविंद राम, प्रवर श्रेणी लिपिक	44
27	मजहब, परिवार	विक्रम सिंह, प्रवर श्रेणी लिपिक	46
28	प्रेरक-प्रसंग	रजनीश कुमार राजन, सहायक	47

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	रचना	रचनाकार	पृष्ठ सं.
29	राजभाषा हिन्दी	गौतम कुमार, सहायक	49
30	ये जिंदगी	प्रीति पिंपल खरे	49
31	अहंकार	राहुल कुमार, सहायक	50
32	मेरा गाँव-मेरा देश	शैलेश कुमार दास, सहायक	51
33	आहिस्ता चल जिंदगी अभी	रमेश कुमार, सहायक	51
34	जानने योग्य आवश्यक बातें	ज्यो.पं.रंगलाल शास्त्री	52
35	पर्यावरण चेतना से अब जागे हिंदुस्तान	प्रमोद कुमार मीना, प्रवर श्रेणी लिपिक	53
36	अहसास	यश बैसोया, प्रवर श्रेणी लिपिक	53
37	पिता-परमेश्वर	गुप्तेश्वर प्रसाद, अधीक्षक	54
38	कार्यालय गतिविधियों की झलकियाँ	राजभाषा शाखा	55
39	राजभाषा संबंधी लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु सुझाव	राजभाषा शाखा	59
40	हिन्दी-गुजराती संवाद	विमलेशकुमार ठक्कर, सहायक	60
41	सूरत में क.रा.बी.योजना : एक नजर	राजभाषा शाखा	62
42	खेल-कूद में उपलब्धियां	राजभाषा शाखा	63
43	प्रतियोगिताओं/प्रोत्साहन योजनाओं में पुरस्कार	राजभाषा शाखा	63
44	कैमरे की नजर से..	मयंक भगरिया, सामाजिक सुरक्षा अधिकारी	65
45	आपका पत्र मिला..		66

जिस देश को अपनी भाषा और साहित्य के गौरव का
अनुभव नहीं है, वह उन्नत नहीं हो सकता |

- डॉ. राजेंद्र प्रसाद

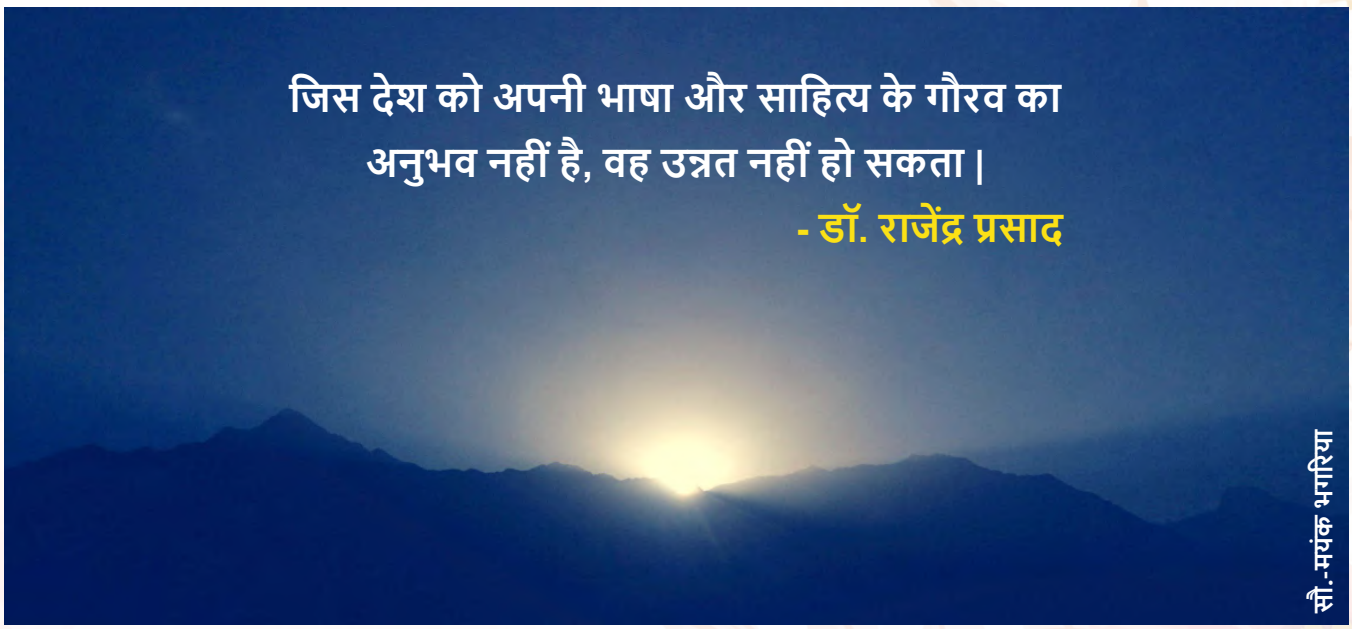

सौ.-मयंक भगरिया

भाग्य का निर्माता कौन ?

सामान्यतः लोग अपने भाग्य को कोसते हैं कि ईश्वर ने उनके भाग्य में केवल दु:ख ही लिखे हैं । वे सोचते हैं कि ईश्वर किसी के भाग्य में बहुत सारे सुख लिखता है या किसी के भाग्य में बहुत सारे दु:ख लिख देता है । लेकिन वास्तव में क्या यह सत्य है ? क्या ईश्वर इतना पक्षपाती हो सकता है कि किसी के भाग्य में बहुत सारे सुख लिखे और किसी के भाग्य में बहुत सारे दु:ख लिखे । वास्तविकता यह है कि प्रत्येक मनुष्य अपने कर्मों के अनुसार ही सुख और दु:ख भोगता है । मनुष्य जिन कर्मों का अपने जीवन काल में सुख और दु:ख नहीं भोग पाता है, वे प्रारब्ध के रूप में उसके साथ चलते हैं । वास्तव में ईश्वर को दोष देने की बजाय अपने कर्मों पर ध्यान देना चाहिए । जिन कर्मों से समाज का कल्याण होता है एवं दूसरों को खुशी मिलती है, ऐसे कर्म सुख के रूप में फलित होते हैं तथा जिन कर्मों से समाज की हानि होती है एवं दूसरों को दु:ख पहुंचता हो, ऐसे कर्म दु:ख के रूप में फलित होते हैं । यही वास्तविकता है एवं कर्म का सिद्धांत है । हमें कर्म के सिद्धांत को समझते हुए विश्वास भाव से निरंतर शुभ कार्य करते रहना चाहिए ।

निष्कर्ष रूप में हर व्यक्ति स्वयं ही अपने भाग्य का निर्माता होता है ।

वासुदेव पारवानी
उप निदेशक

भारतीय संविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल भाषाएँ

1. असमिया	6. गुजराती	11. मराठी	16. मणिपुरी	21. बोडो
2. उड़िया	7. तमिल	12. मलयालम	17. नेपाली	22. डोगरी
3. उर्दू	8. तेलुगू	13. संस्कृत	18. कोंकणी	
4. कन्नड़	9. पंजाबी	14. सिन्धी	19. मैथिली	
5. कश्मीरी	10. बंगला	15. हिन्दी	20. संथाली	

मि एसिक बोलतोय..

"मि एसिक बोलतोय" का मतलब "मै एसिक बोल रहा हूँ । मेरा जन्म 24 फरवरी 1952 को हुआ है। मेरा जन्म इसलिए हुआ है ताकि मैं हमारे देश में निजी क्षेत्र में कार्यरत सभी बीमित कर्मचारी भाइयों और बहनों को सुरक्षा प्रदान करा सकूँ । सुरक्षा से मेरा मतलब है, बीमित कर्मचारी भाइयों/बहनों की जिंदगी को सही मायने में आत्मनिर्भर करना जैसे बीमित कर्मचारियों तथा उनके आश्रितों को चिकित्सा हितलाभ/नकद हितलाभ की सुविधा उपलब्ध करवाना एवं कर्मचारी भाइयों के जीवन के दौरान अथवा उनके जीवन के पश्चात् उनकी पात्रता के अनुसार बीमित कर्मचारी अथवा उनके आश्रितों को रोकड़ हितलाभ की सहायता, उनके कठिन समय में उपलब्ध करवाना ।

देश की आजादी के बाद हमारे देश में निजी क्षेत्र में कार्यरत बीमित कर्मचारियों को तथा उनके आश्रितों को कठिन समय पर सुविधा देने के लिए ही मेरा जन्म हुआ है । मुझमे सम्मिलित होने वाले प्रथम बीमित श्री जवाहरलाल नेहरूजी थे जो हमारे देश के पहले प्रधानमंत्री थे । निजी क्षेत्र में कार्यरत कर्मचारियों/श्रमिकों को किसी भी प्रकार की सुरक्षा नहीं होने के कारण तथा नियोजकों द्वारा उनका शोषण होने की संभावना को ध्यान में रखते हुए भारत के संविधान के द्वारा ही मेरा जन्म हुआ है ।

मेरे श्रमिक भाइयों तथा बहनों, मेरे साथ जुड़ने के लिए आप सभी को आपके मासिक वेतन का मात्र 0.75 प्रतिशत ही अंशदान देय होता है, जो पूर्व में 1.75 प्रतिशत हुआ करता था । किसी भी निजी क्षेत्र में जहाँ मैं लागू होता हूँ, वहाँ कार्यरत कर्मचारी भाइयों/बहनों को नौकरी के पहले दिन से ही स्थायी अपंगता हितलाभ एवं आश्रित हितलाभ की सुविधा उनकी पात्रता के अनुसार प्रदान करता हूँ । महिला बीमित कर्मचारियों के लिए 182 दिनों के लिए प्रसूति हितलाभ की सुविधा 2 बच्चों तक तथा तीसरे बच्चे से 84 दिनों का प्रसूति हितलाभ, हर एक प्रसूति के लिए पात्रता एवं नियमानुसार पंजीकृत महिला कर्मचारियों के लिए दिया जाता है । मेरे द्वारा दी जाने वाली सुविधाओं को बीमित कर्मचारी भाइयों तथा बहनों के लिए सहज बनाने हेतु नियोजकों का भी योगदान सराहनीय है । भारत सरकार के अथक प्रयासों के बाद आज मैं भारत के अधिकतम क्षेत्र में अपने कर्मचारी भाइयों तथा बहनों के साथ उनके अच्छे-बुरे समय में उनके साथ खड़ा हूँ ।

आप सभी पाठकों को मेरा पूरा नाम अब तक पता चल ही गया होगा । मेरा पूरा नाम 'कर्मचारी राज्य बीमा निगम' है । बीमा सुनकर हैरत में पड़ने की जरूरत नहीं है । जीवन बीमा पॉलिसी में आपको मासिक/तिमाही/अर्धवार्षिक या वार्षिक प्रीमियम का भुगतान करने के पश्चात जीवन बीमा या किसी भी प्रकार के दुर्घटना बीमा का हितलाभ मिलता है, परंतु मेरे द्वारा हितलाभ लेने के लिए सबसे पहले आपको

किसी भी इकाई/कंपनी जहाँ मैं लागू होता हूँ, वहाँ का कर्मचारी होना आवश्यक है ।

साथ ही कर्मचारी भाइयों तथा बहनों के परिवार के सदस्यों के बीमार होने पर मेरे अंतर्गत स्थापित औषधालयों एवं अस्पतालों में नि:शुल्क इलाज की सुविधा मिलती है तथा गंभीर बीमारी होने की स्थिति में मेरे अंतर्गत टाई-अप किए गए निजी अस्पतालों में भी पात्रता/नियमानुसार इलाज की सुविधा मिलती है । मेरे अंतर्गत आने वाले बीमित कर्मचारियों को बीमारी की अवधि के दौरान इकाई/कंपनी से अवकाश के दौरान मेरे शाखा कार्यालयों द्वारा बीमारी हितलाभ जो दैनिक मजदूरी/वेतन का 70% मिलता है तथा लंबी बीमारी के लिए यह बढ़कर 80% हो जाता है तथा यह अधिकतम कुल दो वर्ष तक देय होता है । इस बीमारी हितलाभ के दौरान समय-समय पर चिकित्सा जांच की जाती है, जिससे सही एवं जरूरतमंद बीमित कर्मचारियों को इस योजना का पूरा लाभ दिया जा सके ।

कंपनी/इकाई में कार्य के दौरान किसी कर्मचारी के साथ कोई दुर्घटना हो जाने पर अथवा चोट लगने पर अथवा शरीर का कोई अंग (भाग) क्षतिग्रस्त होने पर बीमित की अर्जन क्षमता कम हो जाने के मामलों में मेरे द्वारा उनको कुछ समय के लिए अथवा आजीवन स्थायी अपंगता हितलाभ के माध्यम से पेंशन दी जाती है । दुर्भाग्यवश ऐसी किसी दुर्घटना में बीमित कर्मचारी की कार्य के दौरान मृत्यु हो जाने पर उसके आश्रितजनों को आश्रित हितलाभ के रूप में पेंशन प्रदान की जाती है ।

हाल ही में मेरे अंतर्गत 'अटल बीमित व्यक्ति कल्याण योजना' भी प्रारंभ की गयी है, जिसके द्वारा कर्मचारियों की बेरोजगारी के समय (दिनांक 24 मार्च, 2020 से 30 जून, 2021 तक) बेरोजगार हुए श्रमिकों के लिए तीन माह के वेतन का 50 प्रतिशत दिया गया है ।

साथ ही मेरे द्वारा कोविड-19 महामारी से मरने वाले बीमितों की सामाजिक सुरक्षा तथा उनके परिवारों व आश्रितों के हितों एवं उनकी आजीविका के लिए, “ESIC Covid-19 Relief Scheme” की शुरुआत दिनांक 03/06/2021 से की गई, यह योजना 2 साल के पायलट प्रोजेक्ट के आधार पर (दिनांक 24/03/2020 से 23/03/2022 तक) चलाई गई है, जिससे मेरे अंतर्गत आने वाले बीमित कर्मचारियों के आश्रितों को नियम एवं पात्रतानुसार आजीवन पेंशन प्रदान की जाएगी । आश्रितों में विधवा माता, पुत्र, पत्नी, पिता, पुत्री जो बीमित के ऊपर आश्रित थे उनको पेंशन प्रदान की जाएगी । अविवाहित पुत्री को विवाह तक, पुत्र को उम्र के 25 साल तक, विधवा माता को आजीवन तथा बीमित कर्मचारी की पत्नी को आजीवन अथवा पुनः विवाह तक, पेंशन दी जाएंगी । एसिक नियमानुसार सभी आश्रितों को बीमित कर्मचारी के मासिक वेतन का 90 प्रतिशत बांटा जाएगा । इस योजना के अंतर्गत मेरे बीमित कर्मचारी भाइयों तथा बहनों के आश्रितों को कम से कम रु. 1,800/- (प्रतिमाह) पेंशन दिए जाने की योजना तैयार की गई है।

मैं सदैव यही कामना करता रहूँगा कि मेरे द्वारा आप सभी बीमित कर्मचारियों को आपके जीवन में, कठिनाई के समय पर हितलाभ प्रदान होता रहे तथा आप सभी हमेशा स्वस्थ एवं सुखी रहें ।

श्याम बी. हेडावू
अधीक्षक

हिन्दी की प्रासंगिकता एवं महत्व

"निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल ।
बिन निज भाषा-ज्ञान के, मिटत न हिय को सूल ।"

- भारतेन्दु हरीशचंद्र

किसी भी स्वतंत्र राष्ट्र की अपनी एक भाषा होती है जो उसका स्वाभिमान एवं गौरव होती है। किसी भी भाषा को राष्ट्रभाषा बनने के लिए उसमें सर्वव्यापकता, सरलता, सहजता, वैज्ञानिकता, सब प्रकार के भावों को प्रकट करने का सामर्थ्य आदि गुण होने आवश्यक हैं। हमारे देश में ये सभी गुण केवल हिन्दी भाषा में ही हैं। संस्कृत भारत की सबसे प्राचीन भाषा है जिसे आर्य-भाषा या देवभाषा भी कहा जाता है। हिन्दी इसी आर्य भाषा संस्कृत की उत्तराधिकारिणी मानी जाती है। इसमें प्रत्येक ध्वनि के लिए एक निश्चित लिपि चिह्न का प्रयोग होता है और एक लिपि चिह्न एक ही ध्वनि का प्रतिनिधित्व करता है। हिन्दी विश्व की एक इकलौती ऐसी भाषा है जिसमें जो उच्चारण किया जाता है वही लिखा जाता है। हिन्दी के अतिरिक्त अन्य सभी भाषाओं में उच्चारण और लेखन में बेहद अंतर देखने को मिलता है। हिन्दी भाषा की लिपि देवनागरी है जो विश्व की सर्वाधिक वैज्ञानिक लिपि है। हिन्दी की विशेषता ये भी है कि इसने अन्य भाषाओं के शब्दों को ग्रहण करने में कभी कोई संकोच नहीं किया। इसी वजह से यह भाषा शाब्दिक रूप से समृद्ध एवं अद्यतन है।

स्वतंत्र भारत की संविधान सभा ने 14 सितंबर, 1949 को हिन्दी को भारत संघ की राजभाषा के रूप में अंगीकार किया । इस महत्वपूर्ण निर्णय के महत्व को प्रतिपादित करने तथा हिन्दी को हर क्षेत्र में प्रसारित करने के लिए राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा के अनुरोध पर सन् 1953 से संपूर्ण भारत में प्रतिवर्ष 14 सितंबर को 'हिन्दी दिवस' के रूप में मनाया जाना घोषित हुआ। हिन्दी भारत संघ की राजभाषा होने के साथ ही ग्यारह राज्यों और तीन संघ शासित क्षेत्रों की भी प्रमुख राजभाषा है। राजस्थान, उत्तर प्रदेश, बिहार, मध्यप्रदेश, हरियाणा और दिल्ली आदि राज्यों की यह राजभाषा है। गुजरात, पंजाब, महाराष्ट्र और अंडमान-निकोबार में इसे द्वितीय भाषा का दर्जा दिया गया है। शेष प्रांतों में भी यदि कोई भाषा संपर्क भाषा के रूप में प्रयोग की जा सकती है तो वह हिन्दी ही हो सकती है। हिन्दी जन-आंदोलनों की भी भाषा रही है।

हिन्दी आम आदमी की भाषा के रूप में देश की एकता का सूत्र है। सभी भारतीय भाषाओं की बड़ी बहन होने के नाते हिन्दी विभिन्न भाषाओं के उपयोगी और प्रचलित शब्दों को अपने में समाहित करके सही मायनों में भारत की संपर्क भाषा होने की भूमिका निभा रही है। हिन्दी हमारे देश के कोने-कोने में बोली और समझी जाती है । अहिन्दी भाषी भी थोड़ी-बहुत और टूटी-फूटी हिन्दी बोल और समझ सकता है। हिन्दी के महत्व को गुरुदेव रवीन्द्र नाथ टैगोर ने बड़े सुंदर रूप में प्रस्तुत किया था। उन्होंने कहा था-

"भारतीय भाषाएं नदियां हैं और हिन्दी महानदी।"

एक भाषा के रूप में हिन्दी न सिर्फ भारत की पहचान है बल्कि यह हमारे जीवन मूल्यों, संस्कृति एवं संस्कारों की सच्ची संवाहक, संप्रेषक और परिचायक भी है। बहुत सरल, सहज और सुगम भाषा होने के कारण इसे दुनिया भर में समझने, बोलने और चाहने वाले लोग बहुत बड़ी संख्या में मौजूद हैं। अंग्रेजी एवं चीनी मंदारिन के बाद यह विश्व में तीसरी सबसे ज्यादा बोली जाने वाली भाषा है जो हमारे पारम्परिक ज्ञान, प्राचीन सभ्यता और आधुनिक प्रगति के बीच एक सेतु भी है।

हिन्दी अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भी बहुत पसंद की जाती है क्योंकि यह हमारे देश की संस्कृति और संस्कारों का प्रतिबिंब है। आज विश्व के कोने-कोने से विद्यार्थी हमारी भाषा और संस्कृति को जानने के लिए हमारे देश का रुख कर रहे हैं। आज पूरी दुनिया में 175 से अधिक विश्वविद्यालयों में हिन्दी भाषा पढ़ाई जा रही है। ज्ञान-विज्ञान की पुस्तकें बड़े पैमाने पर हिन्दी में लिखी जा रही हैं। आज संयुक्त राष्ट्र जैसी संस्थाओं में भी हिन्दी की गूंज सुनाई देने लगी है। हमारे प्रधानमंत्री द्वारा संयुक्त राष्ट्र महासभा में हिन्दी में ही अभिभाषण दिया गया था। विश्व हिन्दी सचिवालय विदेशों में हिन्दी का प्रचार-प्रसार करने और संयुक्त राष्ट्र में हिन्दी को आधिकारिक भाषा बनाने के लिए कार्यरत है। उम्मीद है कि हिन्दी को शीघ्र ही संयुक्त राष्ट्र की आधिकारिक भाषा का दर्जा भी प्राप्त हो सकेगा।

हिन्दी के इसी महत्व को देखते हुए तकनीकी कंपनियाँ इस भाषा को बढ़ावा देने की कोशिश कर रही हैं। यह खुशी की बात है कि सूचना प्रौद्योगिकी में हिन्दी का इस्तेमाल बढ़ रहा है। आज वैश्वीकरण के दौर में, हिन्दी विश्व स्तर पर एक प्रभावशाली भाषा बनकर उभरी है। सोशल मीडिया और संचार माध्यमों में हिन्दी का प्रयोग निरंतर बढ़ रहा है। इंटरनेट पर भी अंग्रेजी एवं चीनी मंदारिन के बाद हिन्दी ही सबसे लोकप्रिय भाषा मानी जा रही है। गूगल समेत जितनी भी बड़ी कंपनियों ने सर्वे किया हैं उसमें यह बात सामने आई है कि कोई भी कंपनी या व्यापार अगर भारतीय बाजार में सफल होना चाहता है तो उसे अपने उत्पादों, सेवाओं और अन्य तौर तरीकों को मुख्य रूप से हिन्दी भाषा में करना होगा। आज बाजार में अपना पाँव पसारे कई टीवी चैनलों को लगने लगा है कि अगर हमें भारत में लोकप्रियता अर्जित करनी है और अधिक पैसा कमाना है तो यह हिन्दी के बगैर संभव नहीं । अतः कई लोकप्रिय चैनलों को अंततः अपने प्रसारण हिन्दी में शुरू करने पड़े ।

चीन की अर्थव्यवस्था काफी मजबूत है क्योंकि वहां पर जितने भी उत्पाद या सेवाएँ बेची जा रहीं हैं उसकी निर्माता कंपनियां चीन की ही हैं। ऐसा इसलिए है क्योंकि वहाँ चीनी (मंदारिन) भाषा में ही सब कुछ होता हैं और इसलिए बाहर की कंपनियाँ वहां इतनी सफल नहीं हो सकती। चीन के लोगों द्वारा अपनी भाषा को महत्व देने के कारण आज वहां पर फेसबुक, गूगल, अमेजन, उबेर, व्हाट्सएप्प आदि की जगह पर उनकी खुद की भाषा में उनके सर्च इंजन और सोशल मीडिया अेप आदि बने हुए हैं। अगर आज हम अंग्रेजी की जगह हिन्दी को महत्व दे रहे होते तो ज्यादातर वस्तुएं और सेवाएँ जो हम उपयोग में ले रहे हैं वे भारत में बनी हुई होतीं।

परंतु पाश्चात्य संस्कृति की तथाकथित आधुनिक मानसिकता की अधिमात्रा से पीड़ित कुछ लोग आज भी अंग्रेजी के पक्षधर होने के साथ-साथ हिन्दी के विरोधी भी बने हुए हैं। ऐसे व्यक्तियों की कमी नहीं जो हिन्दी अच्छी तरह बोलना व लिखना जानते हैं लेकिन वे अपने मिथ्याभिमान का प्रदर्शन अंग्रेजी

बोलकर करते हैं। हम हमारे ही देश में अंग्रेजी के गुलाम बन बैठे हैं और हम अपनी ही हिन्दी भाषा को वह मान-सम्मान नहीं दे पा रहे हैं, जो इस भाषा के प्रति हर देशवासी के नजर में होना चाहिए। हम या आप जब भी किसी बड़े होटल या बिजनेस क्लास के लोगों के बीच खड़े होकर गर्व से अपनी मातृभाषा का प्रयोग कर रहे होते हैं तो उनके दिमाग में आपकी छवि एक गंवार की बनती है। पिछले दिनों पढ़ी ये पंक्तियाँ याद आती हैं-

"इस दुनिया में बड़ा बनूँ कैसे,
इतना ओछापन अपने बस में नहीं।"

मातृभाषा से हमेशा भावनाएं जुड़ी रहती हैं। किसी को "सॉरी" कहना एक आम बात हैं और जरूरी नहीं हैं कि अगर "सॉरी" कह रहे हैं तो वाकई में आप "सॉरी" महसूस कर रहे हो। लेकिन अगर आप "माफ़ करना" कहते हैं तो वाकई में आप मन के भीतर "माफ़ी" महसूस करेंगे। घर पर बच्चा अतिथियों को अंग्रेजी में कविता आदि सुना दे तो माता-पिता गर्व महसूस करने लगते हैं। इन्हीं कारणों से लोग हिन्दी बोलने से घबराते हैं। यह निर्विवाद सत्य है कि व्यक्ति के व्यक्तित्व का विकास अपनी ही भाषा में पाठन-पाठन से होता है, अन्य किसी भाषा से नहीं। विदेशी भाषा के माध्यम से पढ़ने के कारण बालक अपने विचारों को पूरी तरह अभिव्यक्त नहीं कर पाता, फलतः उसके व्यक्तित्व का पूर्ण रूप से विकास नहीं हो पाता है ।

भाषा का विकास उसके साहित्य पर निर्भर करता है। आज के तकनीकी युग में विज्ञान और इंजीनियरिंग के क्षेत्र में भी हिन्दी में काम को बढ़ावा देना चाहिए ताकि देश की प्रगति में ग्रामीण जनसंख्या सहित सबकी भागीदारी सुनिश्चित हो सके। हिन्दी भाषा के माध्यम से शिक्षित युवाओं को रोजगार के अधिक अवसर उपलब्ध हो सकें, इस दिशा में निरंतर प्रयास भी जरूरी है।

हिन्दी को भारत की राजभाषा के रूप में प्रतिष्ठित दर्जा दिलाने के बाद इसे राष्ट्रभाषा के रूप में विराजमान करने के लिए संघर्ष करना ही होगा। विश्व या भारत की किसी भी अन्य भाषा को हेय सिद्ध करके अथवा अपमानित किए बिना हिन्दी को उपेक्षा की मार से बचाना होगा। लेकिन यह लक्ष्य रस्म अदायगी से नहीं बल्कि संकल्प, संघर्ष और सूझबूझ से ही प्राप्त होगा।

सामान्य जनजीवन में हिन्दी की स्थिति की बात करते हुए दुष्यन्त कुमार की गजल की ये पंक्तियाँ मर्मान्तक रूप में प्रासंगिक हो जाती हैं :

"कहाँ तो तय था चिराग़ाँ हर एक घर के लिए,
कहाँ चिराग़ मयस्सर नहीं शहर के लिए ।"

अमित इन्दौरिया
वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी

यात्रा वृत्तांत – गंगटोक (सिक्किम)

उत्तर-पूर्व भारत के प्रमुख हिल-स्टेशन गंगटोक जो सिक्किम राज्य की राजधानी है एवं कंचनजंघा पर्वतमाला के साए में बसा हुआ है, की यात्रा का अनुभव प्रस्तुत करने का प्रयास किया है।

जनवरी, 2018 में सपरिवार गंगटोक की यात्रा करने का विचार मन में आया । इसका प्रमुख कारण एल.टी.सी. में दी जाने वाली विशेष रियायत भी रही । यात्रा हेतु टिकट समय पर बना ली गई एवं रुकने के लिए गंगटोक में स्थित निगम के टाई-अप होटल की बुकिंग क्षे.का., कोलकाता के माध्यम से की गई जो बहुत ही वाजिब दर पर बुक हो गया ।

बहरहाल यात्रा प्रारम्भ हुई । सूरत से नई-दिल्ली एवं वहाँ से बागडोगरा (प.बंगाल) एयरपोर्ट पर वायु विमान के माध्यम से पहुंचे । उसके द्वारा न्यू-जलपाईगुडी (प.बंगाल) तक जाया जा सकता है जो गंगटोक का निकटतम रेलवे स्टेशन है । बागडोगरा एयरपोर्ट भारतीय वायु सेना का मिलिट्री एयर-बेस है साथ ही इसे यात्री विमानों के आवागमन हेतु भी प्रयोग में लाया जाता है । एयरपोर्ट पर स्थित प्री-पेड टेक्सी बुकिंग की सुविधा का लाभ उठाते हुए हमने हमारे गंतव्य गंगटोक जो एयरपोर्ट से लगभग 124 कि.मी. की दूरी पर स्थित है, के लिए कार बुक की एवं रवाना हो गए । रास्ते में चाय-नाश्ते का आनंद भी लिया । कुछ देर बाद पहाड़ी रास्ता आ गया एवं कार में हिचकोले खाते, वादियों का आनंद लेते, "तीस्ता" नदी के किनारे चलते हुए हम लगभग 4.30 घंटे बाद गंगटोक पहुंचे । ऐसे दुर्गम रास्तों पर वाहन कोई अनुभवी ही चला सकता है । गंगटोक में एम.जी.रोड एक प्रमुख मार्केट है इसके निकट ही हमारा विश्राम स्थल स्थित था ।

अगले दिन सवेरे हमने भ्रमण हेतु स्थानीय टूरिस्ट कार बुक की । कार ड्राइवर बहुत ही विनम्र एवं मृदुभाषी था । इसने हमें कुछ पॉइंट्स जैसे पुष्प प्रदर्शनी केंद्र, हनुमान टोक (श्री हनुमान जी का प्रसिद्ध मंदिर), गणेश टोक (श्री गणेश जी का प्रसिद्ध मंदिर), ताशी व्यू-पॉइंट जहां से कंचनजंघा पर्वत शिखर का हिमाच्छादित एवं मनोरम दृश्य दिखाई देता है, वाटर फाल आदि देखे । पहाड़ी स्थानों पर संध्या जल्दी हो जाती है इसलिए हम 4 से 5 बजे तक वापस विश्राम स्थल आ गए एवं वही मार्केट से स्थानीय व्यंजन मोमोस एवं थुप्का (नुडल्स एवं ऑमलेट के मेल से बना) का स्वाद चखा तथा स्थानीय सामान, गरम कपडों आदि की खरीद भी की ।

अगले दिन हमें भारत-चीन बोर्डर स्थित "नाथूला-पास" तक जाना था जो गंगटोक से 54 कि.मी. की दूरी पर स्थित है । इसके लिए परमिट बनवाना होता है जो पर्यटन विभाग के कार्यालय अथवा टूर-ट्रेवलर्स की सहायता से पासपोर्ट साईज फोटो एवं आई.डी. प्रूफ जमा करवाकर बनवाया जा सकता है ।

नाथुला पास बहुत ऊंचाई पर स्थित है एवं ठण्ड बहुत अधिक होती है इसलिए यात्रियों के लिए रास्ते में किराये पर गरम कपड़े भी मिलते हैं । हमने भी 100/- प्रति की दर से गरम कपड़े ले लिए जो काफी सहायक रहे । गंगटोक से 39 कि.मी. की दूरी तक जाने पर "छन्गु" लेक आती है जो बहुत सुंदर झील है । झील के किनारे "याक" की सवारी की । यहीं पर स्थित "रोप-वे" की सवारी का आनंद भी लिया जिसमें बैठने के बाद चारों तरफ बर्फ से ढके ऊँचे पहाड़, नीचे सुन्दर झील एवं उसके नीचे गहरी खाई तथा सर्पीले आकार की दिखाई देती सड़कों का नजारा काफी रोचक लगा । यहाँ से आगे चले एवं बीच-बीच में आने वाले जल-पान गृहों पर मैगी, चाय एवं फ़्राईड राईस का आनंद लिया । इसके आगे चलने पर "बाबा हरभजन सिंह" का मंदिर आया । यह भारतीय सैनिक की याद में बना है एवं इसकी देख-रेख भी भारतीय सेना के द्वारा ही की जाती है । दुर्भाग्यवश उस दिन "नाथूला-पास" बंद होने के कारण बोर्डर पर नहीं जा सके एवं कुछ दूरी से वापस लौटना पड़ा । यह स्थल समुद्र-तल से लगभग 12000 फीट की ऊंचाई पर स्थित था जिससे हमें श्वास लेने में कठिनाई महसूस हुई एवं यह समझ में आया कि भारतीय सेना किन विकट परिस्थितियों में देश की रक्षा करती है ।

अगले दिन हमने 'पैरा-ग्लाइडिंग' एक्टिविटी करने का साहसिक निर्णय लिया एवं लॉचिंग स्थल पर पहुंचे । आवश्यक सुरक्षा उपकरण पहनाए गए एवं पैराग्लाइडर संचालक ने हमें साथ लेकर ऊँची पहाड़ी से छलांग लगा दी । हम पतंग की भाँति हवा में हिलोरे खाते रहे एवं आकाश से ही गंगटोक के सुन्दर नजारों का आनंद लेते रहे । लगभग 10 से 15 मिनट की उड़ान के बाद सकुशल उतरे तो ऐसा लगा मानो नया जीवन मिल गया हो इसीलिए हम शीघ्र ही मोनेस्ट्री (बौद्ध मठ) गए जहाँ भवन की सुन्दर बनावट, शांत वातावरण एवं आध्यात्मिक माहौल से मन को शांति मिली एवं नई ऊर्जा का संचार हुआ ।

गंगटोक भ्रमण काफी यादगार रहा । यहाँ की प्राकृतिक सुन्दरता, पहाड़, बर्फीली चोटियाँ, हरियाली, वादियाँ, साफ़-स्वच्छ हवा एवं यहाँ के नागरीकों का विनम्र स्वभाव अविस्मरणीय रहेगा ।

विक्रम दायमा
अधीक्षक

राजभाषा (संघ के शासकीय प्रयोजनों के लिए प्रयोग) नियम, 1976
(यथा संशोधित 1987, 2007 तथा 2011) के तहत

हिन्दी में प्राप्त पत्रादि के उत्तर केन्द्रीय सरकार के कार्यालय से हिन्दी में दिए जाएंगे ।

पिता..

कंधे पर बैठाया,
कंधे पर सुलाया,
बाहों में झुलाया,
वो भी क्या दिन थे,
जिसे मैंने आज तक नहीं भुलाया,
वो थे मेरे पिता !

****

ना भोजन की चिंता ना कमाने की चिंता,
ना बिस्तर की चिंता ना सोने की चिंता,
बचपन बीता ना किसी बात की चिंता,
चिंता तो हर लिए थे वो अपने सर,
उस इन्सान के हैं इतने एहसान मेरे सर,
जिसने सारे दुःख लिए थे अपने सर,
ऐसे थे हमारे पूज्य पिता !!

****

जन्म के बाद हमें चलना सिखाया,
सिखाया हमें दौड़ना और भागना,
पर जब भी बैठा मैं थक-हार कर,
खुद के कंधो पर हमें बैठाया,
क्या दिन-क्या रात प्यार किया हमें जी भरकर,
तो क्यों न मैं शीश झुकाऊँ,
अपने परमपिता परमेश्वर जानकर !!

****

अपनी निंदिया खो कर,
मुझको सुलाया दिन-रात,
अपनी भूख मार कर,
मुझको खिलाया दिन-रात,
कैसे उतारूं ये कर्ज उनका, नहीं है मुझे यह ज्ञात,
है अब मेरी यही तमन्ना, कर दूँ उन पर सुखों की बरसात !!

****

बचपन में अंगुली पकड़कर चला मैं बाजार,
दुकानों में सजे थे खिलौने कई हजार,
देख खिलौने मेरे मन में उठे कई सवाल,
पापा मुझे भी ला दो एक-दो नहीं खिलौने चार,
मन की बात जानकर पापा रुके बीच बाजार,
देखा मुझे एक नजर ख़रीदे खिलौने चार,
देख के पापा का यह प्यार खुशियाँ मिली अपार,
ऐसे ही मैं नहीं करता अपने पापा से प्यार !!

****

होली का त्योंहार था चेहरे पर मुस्कान था
सुबह से ही पापा का इंतजार था,
रंग-बिरंगी पिचकारी एवं शर्ट का इंतजार था
किन्तु मेरे पापा अपने काम में व्यस्त था,
देख मेरी उदासी मेरे पापा को गम आया था
मेरे मन की स्थिति जान उन्हें भी दुःख हुआ था
पापा की स्थिति जान मैंने भी चुप्पी लगाई थी
क्योंकि पापा के पास पैसों की तंगी आई थी,
अपनी उदासी को छोड़ मैंने दौड़ लगाया था
मम्मी के पास भी गुहार लगाया था,
पर यहाँ भी सन्नाटा छाया था
पर मेरा उदासी ज्यादा देर टिक नहीं पाई थी
क्योंकि पापा ने शर्ट और रंग-बिरंगी
पिचकारी खरीद लाई थी,
उधार ही सही पर पापा ने बेटे के चेहरे पर
मुस्कान लाया था,
यदि पापा नहीं होते तो सारा त्योंहार बेकार था !!

****

बचपन में पिता ने हमें ढोया,
स्कूल और कॉलेज के खर्च को ढोया,
ढोया ट्यूशन और हमारी फैशन को,
ढोया हमारी इच्छा और मांग को,
उफ़ तक नहीं किया हमें ढोने में,
मेहनत कम नहीं की हमें पढ़ाने में,
न जाने कितनी अपनी इच्छाओं को मारा है,
अपने खून पसीने से हमें संवारा है,
पर आज के बच्चों को पापा बोझ लगते हैं,
वृद्धाश्रम में छोड़ आते हैं,
भूल जाते है उनके इस एहसान को,
उनकी दी हुई इस पहचान को,
अरे पापा तो पापा हैं,
वो तो हमारे भाग्य विधाता हैं,
वो तो हमारे भाग्य विधाता हैं |

****

हर पिता का एक ही सपना,
पुत्र प्यारा सा हो एक अपना
चाहे काला हो या गोरा, प्यार दूँ जीवन का सारा,
देख पुत्र को इतराते हैं,
उसके हर कदम को बढ़ाते हैं,
भले ही अपने पाँव में न हों जूते,
पर पुत्र को पहनाते हैं जूते,
धूप बारिश की मार से बचाते हमें,
हर काली-बुरी नजर से बचाते हमें,
अपना निवाला पहले हमें खिलाते,
मेहनत से हमें काबिल बनाते,
पर एक दिन यह सपना टूट जाता है,
जब बीच मझधार में
पुत्र मुंह मोड़ लेता है,
पर फिर भी पिता का प्यार कम होता नहीं,
पिता तो पिता है,
पिता सागर है, पिता नदी है,
पिता आसमान है, पिता संजीवनी है,
पिता पालनहार है, पिता उम्मीद है,
सच में कहें तो पिता, जीता-जागता भगवान है |

****

गुप्तेश्वर प्रसाद
अधीक्षक

स्वास्थ्य की भूमिका

स्वास्थ्य सभी के जीवन में एक बहुत महत्वपूर्ण पहलू है। अच्छा स्वास्थ्य ही जीवन के सारे सुखों का आधार है। स्वस्थ और फिट लोग वास्तव में खुशी और शांति से अपने जीवन का आनंद लेते हैं।

“कहा ही गया है 'हेल्थ इज वेल्थ' या सबसे बड़ा सुख 'निरोगी काया”।

अगर शरीर स्वस्थ होगा तो मन प्रसन्न होगा और मन प्रसन्न होगा तो दिमाग शांत होगा। तभी आप जीवन का हर आनंद उठा सकेंगे । अच्छे स्वास्थ्य का मतलब केवल शारीरिक रूप से फिट होना नहीं है, इसका मतलब व्यक्ति की स्वस्थ मानसिक स्थिति से भी है। अपने आप को स्वस्थ रखने के लिए हमें स्वस्थ जीवन शैली अपनाने की जरूरत है।

स्वस्थ जीवन शैली का अर्थ है - स्वस्थ आहार, खाने जैसी अच्छी आदतों का पालन करना, नियमित व्यायाम करना और रात में पर्याप्त नींद लेने के लिए समय निकालना। विभिन्न बीमारियों को दूर रखने और पूरी तरह से निरोगी जीवन जीने के लिए स्वस्थ जीवन शैली का पालन करना आवश्यक है। एक स्वस्थ जीवन शैली विकसित करने में कुछ समय लगता है। काम आसान तो नहीं है लेकिन निश्चित रूप से करने लायक ज़रूर है। हमें नियमित रूप से अपनी बहुत व्यस्त जीवन शैली में से कुछ समय निकालकर दैनिक शारीरिक व्यायाम में शामिल होना चाहिए। दैनिक आधार पर 30 से 60 मिनट का व्यायाम किसी के भी फिट रहने के लिए आदर्श है। दैनिक आधार पर निकाला गया यह एक घंटा हमारी जिंदगी का सबसे बड़ा निवेश हो सकता है।

आज कल सभी लोग सोशल मीडिया यानि यू-ट्यूब, फेसबुक, व्हाट्स-एप, इंस्टाग्राम इत्यादि में इतने व्यस्त हो गए है कि सुबह उठने के बाद एवं रात को सोने से पहले हर वक्त सिर्फ उसी में अपना समय खराब कर देते है। यह भी आज-कल हमारे जीवन में डिप्रेशन एवं एंग्जाइटी का मुख्य कारण है। आज कल सोशल मीडिया भी काफी हद तक नकारात्मकता से भरा हुआ है। हमें चाहिए कि इसका सही तरह से उपयोग करें एवं अपना कीमती समय इस पर लगाने की बजाय कुछ अच्छी आदतें जैसे नियमित व्यायाम, उचित नींद लेना, अच्छी किताबें पढने में लगाए ताकि हम मानसिक एवं शारीरिक दोनों रूप से स्वस्थ रह सकें और अपने जीवन का अच्छे से आनंद ले सकें।

माता-पिता को भी अपने बच्चों को बचपन से ही अच्छे स्वास्थ्य और स्वच्छता के बारे में शिक्षित करना शुरू कर देना चाहिए और उन्हें फिट रहने के लिए अपने जीवन में शारीरिक और मानसिक व्यायाम को शामिल करने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए।

साहिल नारंग
शाखा प्रबन्धक

याद आती तो होगी

भले तुम मुझे ना बताओ, पर कभी,
तुम्हें भी मेरी याद आती तो होगी,
भले ही हर किसी को जता ना पाओ,
पर किसी ना किसी को जताती तो होगी ||

माना कि अब तुम्हें जरा भी फ़ुरसत नहीं है,
पर तन्हाई में कभी मेरे बारे में सोचती तो होगी,
जब भी कभी थक कर सो जाती होगी,
सपनों में सही, पुरानी यादें संजोती तो होगी ||

जानता हूँ, तुम्हारे दिल की धड़कनों में
अब कोई और बसा है,
पर कहीं कोने में ही सही थोड़ी सी जगह तो होगी,
जिन जगहों पर हमने थामे थे एक दूसरे का हाथ,
वो जगहें बरबस तुम्हें मेरी याद दिलाती तो होगी ||

भले तुम मुझे ना बताओ, पर कभी,
तुम्हें भी मेरी याद आती तो होगी,
भले ही हर किसी को जता ना पाओ,
पर किसी ना किसी को जताती तो होगी ||

माँ

तेरी गोद से जिन्दगी की शुरुआत हुई,
काश इस जिन्दगी का अंत भी तेरी गोद से होता, माँ||

तूने मुझे चलना सिखाया, हँसना-रोना, बोलना सिखाया,
जीवन के गूढ़ रहस्यों को समझाना सिखाया माँ,
तुम ही देवता, तुम ही देवी, तुम ही मेरी जान हो,
तुम ही मेरा सब कुछ, तुम ही मेरा जहान हो माँ|

तेरी गोद से जिन्दगी की शुरुआत हुई,
काश इस जिन्दगी का अंत भी तेरी गोद से होता माँ||

सब चाहते हैं, पैसा मिले, शोहरत मिले, नाम मिले,
पर, भगवन कुछ मिले न मिले हर जनम में यही माँ मिले|
तुम साथ हो तो जीवन में खुशियाँ है, आनंद है, कोई गम नहीं है,
ऐसे ही सदा साथ रहती, तो कितना अच्छा होता माँ |

तेरी गोद से जिन्दगी की शुरुआत हुई,
काश इस जिन्दगी का अंत भी तेरी गोद से होता माँ||

पंकज कुमार
सहायक

मैं दुनिया की सब भाषाओं की इज्जत करता हूँ, परन्तु मेरे देश में हिंदी की इज्जत न हो, यह मैं नहीं सह सकता ।

- आचार्य विनोबा भावे

कार्य के प्रति लगन

एक मिस्त्री बहुत सालों से एक ठेकेदार के अधीन मकान बनाने का काम करता था। लेकिन अब वह बहुत बूढ़ा हो चला था और उससे मकान बनाने की मेहनत भरा काम नहीं हो पाता था। इसलिए उसने अपने काम से हमेशा के लिए सन्यास लेने का मन बनाया ताकि अपनी बची हुई थोड़ी बहुत जिन्दगी वह अपने परिवार वालों के साथ व्यतीत कर सके।

अत: वह अपने ठेकेदार के पास गया और अपने सन्यास लेने के बारे में उसे बताया। उसकी बात सुनकर ठेकेदार को मन ही मन थोड़ा दु:ख हुआ क्योंकि वह मिस्त्री उस ठेकेदार का बहुत ही ईमानदार और अनुभवी मिस्त्री था। लेकिन फिर भी ठेकेदार ने उस मिस्त्री से कहा, "ठीक है। मैं आपकी परेशानी समझ सकता हूँ लेकिन क्या आप सन्यास लेने से पहले एक आखिरी मकान बनायेंगे ?"

अपने ठेकेदार का मान रखते हुए उसने अन्तिम मकान बनाने के लिए अपनी सहमति दे दी। चूंकि वह जल्दी से जल्दी उस मकान को बनाकर पूर्ण रूप से तैयार कर देना चाहता था, इसलिए उसने कई शॉर्टकट तरीके अपनाए और अधूरे प्रयास करते हुए बे-मन से उस मकान को जल्द से जल्द बनाकर तैयार कर दिया।

जब मकान बनकर तैयार हो गया तो ठेकेदार उस मकान का निरीक्षण करने के बहाने मकान को देखने आया। मिस्त्री के हाथ में उस मकान की चाबी देते हुए कहा, "यह मेरी तरफ से आपका सेवानिवृत्ति उपहार है।"

क्या आप अन्दाजा लगा सकते हैं कि जब ठेकेदार ने उस मकान की चाबी, उस सन्यास लेने वाले मिस्त्री को दी होगी, तब उसे अपने बनाए गए उस आखिरी मकान के प्रति ये सोचकर कितना अफसोस हुआ होगा कि कितना बेहतर होता यदि मैं इस मकान को भी उतने ही उत्साह व लगन के साथ बनाता जितने आज से पहले तक बनाए थे।

इस छोटी सी लघुकथा की सीख यह है कि काम चाहे पहला हो या आखिरी, यदि उसे स्वीकार किया है, तो पूरे मन से पूरा करना चाहिए अन्यथा उस काम को अस्वीकार ही कर देना चाहिए, ताकि जिन्दगी भर के लिए कोई पछतावा न रह जाए।

रणविजय कुमार
सहायक

मजदूर हूँ साहब मजबूर नहीं

यह कविता संसार में एक मजदूर (किसान, अन्नदाता) के जीवन के संघर्ष को दर्शाती है, साथ में यह भी उल्लेख करती है कि वह मजबूर नहीं है | उसकी कर्तव्यनिष्ठा, मेहनत, लगन का वर्णन करती है |

दु:ख हो या सुख, अपने आप को सँभालना जानता हूँ,
हाथ फैलाने की आदत नहीं, दाना चुगना जानता हूँ,
भीख मांगने की आदत नहीं, कर्म करके जीवन को सींचना जानता हूँ,
मजदूर हूँ साहब, मजबूर नहीं, अपनी रोटी कमाना जानता हूँ |

खून-पसीने की कमाई से, परिवार का पेट पालना जानता हूँ,
गाड़ी-घोड़े का शौक नहीं, साहब पैदल चलना जानता हूँ,
आंधी, तूफान या हो बिरखा, डट कर सामना करना जानता हूँ,
मजदूर हूँ साहब, मजबूर नहीं, अपनी रोटी कमाना जानता हूँ |

मेहनत, कर्म, सत्य और विश्वास से अनूठा रिश्ता मेरा, उसी के अनुरूप बढ़ना जानता हूँ,
सर्दी हो या हो गर्मी, धरा को सींचकर अन्न उगाना जानता हूँ,
कष्ट भले ही आये जीवन में, औरों का भाग्य-विधाता बनना जानता हूँ,
मजदूर हूँ साहब, मजबूर नहीं, अपनी रोटी कमाना जानता हूँ |

धरा ही है स्वर्ग मेरा, उसी के सम्मान के लिए जीना जानता हूँ,
मुझ पर भले ही कांटो का पहाड़ टूटे, लेकिन औरों को सींचना जानता हूँ,
कर्म भले कैसा ही हो मेरा, सादा जीवन जीना जानता हूँ,
मजदूर हूँ साहब, मजबूर नहीं, अपनी रोटी कमाना जानता हूँ |

न हो मेरे जीवन या मुझ पर राजनीति, इतना कहना जानता हूँ,
मेहनत ही मेरा धर्म है, इसी के सहारे नाव खेना जानता हूँ,
कहना है उन ठेकेदारों से मेरा शोषण बन्द करो, जमीन पर लाना जानता हूँ,
मजदूर हूँ साहब, मजबूर नहीं, अपनी रोटी कमाना जानता हूँ |

ओमप्रकाश प्रजापत
प्रवर श्रेणी लिपिक

विचारों से बनता है संसार

विचारों से ही हम अपना संसार बनाते है और हमारे विचारों के अनुसार ही संसार हमें फल देता है । एक पुराना किस्सा है - किसी कम पढ़े-लिखे युवक को विरासत में एक जहाज मिल गया । उसे न तो समुद्र के बारे में कुछ ज्ञान था और न ही जहाज के बारे में । उसने मन में विचार किया कि वह समुद्र की यात्रा करेगा और अपने जहाज का कप्तान भी वह स्वयं होगा । एक दिन वह जहाज लेकर अपनी समुद्र यात्रा पर चल पड़ा । कप्तानी की जिम्मेदारी स्वयं संभाल ली और सभी कर्मचारियों को इस आशय से अवगत करा दिया । जहाज पर पहुँचते ही उसने सभी कर्मचारियों को आदेश दिया कि वे अपना-अपना काम संभाल लें । जहाज समुद्र में बढ़ा जा रहा था । कप्तान महाशय जहाज के डेक पर जा पहुंचे । वहाँ उन्होंने देखा कि एक व्यक्ति बहुत बड़े चक्र को घुमा रहा है ।

कप्तान ने उससे उस विषय में पूछा तो उन्हें बताया गया कि यह जहाज को सही दिशा की ओर ले जाता है । कप्तान को कुछ समझ में नहीं आया । कप्तान ने आदेश दिया "मुझे यहाँ पर इस आदमी की कोई जरूरत महसूस नहीं होती । जहाज के पाल ही जहाज को आगे ले जाने के लिए काफी हैं । पाल खोल दो और जहाज को अपने आप आगे बढ़ने दो ।

कप्तान के आज्ञा का पालन हुआ परंतु उसके बाद जो दुर्घटना हुई और जो गिने-चुने लोग बचे, वो उस मूर्ख कप्तान को कभी नहीं भूल पाये । क्या आपको याद है, उस कप्तान ने क्या कहा था । उसकी कही बात जरा दुबारा सुनिए "पतवार चालक की आवश्यकता नहीं है और जहाज अपने आप चलने दिया जाए । अब जरा सोचिए कि क्या उस कप्तान की भाँति आज हमने अपने जीवन को पतवार रहित तो नहीं छोड़ दिया है । क्या हमने अपने मन की पतवार को अपने हाथ में थामने का प्रयत्न किया है । क्या हमने अपने मन को वश में कर उसे अपनी इच्छा के अनुसार चलाने की कोशिश की है । क्या हमें कभी उसकी उच्छश्रृंखलता पर कोई रोक लगाई है अथवा उसे यूं ही इधर-उधर भागने की खुली छूट दे दी है । क्या हमारा मन क्रोध अथवा अन्य मनोविकार के वशीभूत होकर इधर-उधर भागता है । हमेशा देखने में आया है कि हमारा बेकाबू मन हमें मार्ग से दूर ले जाता है जिसे हमने काफी विचार करने के बाद चुना था और जिसके उपर चल कर जीवन को संवारने का फैसला किया था । आखिर क्यों हम अपने मन पर काबू नहीं कर पाते । इसका सीधा कारण है कि हमें अपनी स्थितियों और क्षमताओं का ठीक-ठाक ज्ञान नहीं है । जहाज के कप्तान की तरह ही हम भी नासमझी से फैसला करते हैं । जिस काम को हम करना नहीं जानते या उसके बारे में पूरी जानकारी नहीं रखते, उस पर भी अपनी नादानी का हुक्म चलाते हैं । जब तक हम परिस्थितियों के साथ तालमेल बनाने लायक नहीं बनते, तब तक हालात हमारे नियंत्रण में नहीं आते ।

याद रखें, "सफलता के जहाज को वर्तमान परिस्थितियों को भाँप कर उनके आधार पर सावधानी एवं परिश्रम के प्रयोग से दिशा का निर्धारण करके ही मंजिल मिलती है ।" जीवन और काम उद्देश्यहीन हों तो बहुत जल्द ही सारहीनता का भय होने लगता है । हमारे उद्देश्य दुनिया को देखने का नजरिया भी बनते हैं । हम आस-पास की महत्वपूर्ण और अर्थपूर्ण चीजों को उनकी संपूर्णता समझने लगते हैं । हम तहे-दिल से अपने काम को अंजाम दे पाते हैं । ध्यान रहे कि हर काम, हर व्यवसाय और नौकरी में मन लगा कर काम करने वाले की बेहद इज्जत की जाती है और तरक्की की राह भी ऐसे लोगों की राह तकती है ।

इस संदर्भ में मशहूर वैज्ञानिक अल्बर्ट आइन्स्टीन से जुड़ा एक किस्सा है । किसी ने आइंस्टीन से पूछा कि अगर आपको ईश्वर से सवाल करने का मौका मिले तो आप क्या पूछेंगे । आइंस्टीन ने फौरन बताया कि वह ईश्वर से पूछेंगे कि यह ब्रह्मांड कैसे शुरू हुआ क्योंकि बाकी मसला गणित की मदद से सुलझा लिया जाएगा । हालांकि आइन्स्टीन इस सवाल में यह भी जोड़ना चाहते थे कि ब्रह्मांड बनाया ही क्यों गया ?

यही सवाल अहम सूत्र रखता है कि हमारे होने का उद्देश्य क्या है और इसे जानकर ही हम अपने जीवन व काम की सही दिशा तय कर सकते हैं । अपने उद्देश्यों की पहचान हमारे काम में हमारी भूमिका तय करती है । काम को इससे रचनात्मकता ऊर्जा मिलती है । तयशुदा उद्देश्य हमारे काम और जीवन को सहजता देते हैं । पहला ये हमें अपनी क्षमता को रचनात्मकता अभिव्यक्ति देने में मददगार होते हैं । दूसरा ये हमें अपने काम द्वारा समाज को रचनात्मक सेवा का अवसर प्रदान कराते हैं । इसलिए खुद से हर वक्त पूछते रहिए कि मेरे काम का उद्देश्य क्या है और क्या मैं उन्हें पूरा कर पा रहा हूँ ।

रजनीश कुमार राजन
सहायक

प्रान्तीय ईर्ष्या–द्वेष को दूर करने में जितनी सहायता इस हिंदी प्रचार से मिलेगी, उतनी दूसरी किसी चीज़ से नहीं मिल सकती ।
- सुभाषचंद्र बोस

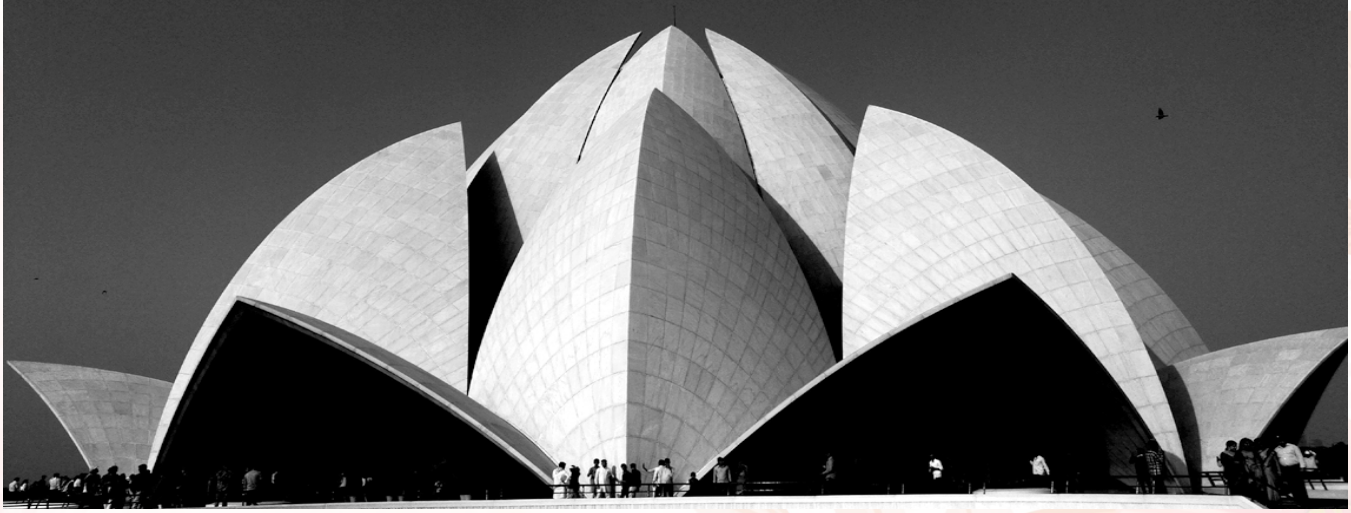

सौ.-मयंक भगरिया

कैसा है भारत एवं कैसा है भारत का संविधान

भारत, इसके नाम में ही ऐसा आकर्षण है कि हर देश इसकी ओर खिंचा चला आता है और जब बात भारत के संविधान की हो तो ये दुनिया का वाकई सबसे खूबसूरत दस्तावेज है |

मेरा भारत महान है, ये हमारी शान है,
खुशकिस्मती है मेरी, यह मेरी पहचान है,
मेरा भारत महान है, ये हमारी शान है |
राष्ट्र के लिए कुछ कर सको, ये मेरा सम्मान है,
तिरंगे से लिपटकर जाओ, ये मेरा अरमान है,
संविधान कितना खूबसूरत है इसका,
ये तो ईश्वरीय वरदान है |
प्रस्तावना इसकी आत्मा है तो, मूल अधिकार इसकी साँस है,
नीति निदेशक तत्व गहने हैं तो, मूल कर्त्तव्यों की मिठास है |
राष्ट्र के नीति निर्माताओं का, इसमें पूरा विधान है,
दुनिया का सबसे खूबसूरत दस्तावेज, ऐसा मेरा संविधान है |
मेरा भारत महान है, ये हमारी शान है,
संविधान कितना खूबसूरत है इसका, ये तो ईश्वरीय वरदान है |
वे देवदूत थे जिन्होंने इस संविधान को रचाया,
गीता-कुरान-बाइबिल बनाकर, हर भारतीय के मन में बसाया |
देखो हमारी संसद को, कैसे ये इठलाती है,
जो प्रश्न उठाते लोकतंत्र पर, उन्हें ये झुठलाती है |
मेरा भारत महान है, ये हमारी शान है,
संविधान कितना खूबसूरत है इसका, ये तो ईश्वरीय वरदान है |
न्यायपालिका की आजादी से, न्याय का मंदिर जगमगाया है,
गरीबों की आशा है, उनका मन इसी ने बहलाया है |
न्यायाधीशों की कुर्सी पर देखो, वे बैठे भगवान है,
मेरा संविधान कितना खूबसूरत, ये मेरा अभिमान है |

मेरा भारत महान है, ये हमारी शान है,
संविधान कितना खूबसूरत है इसका, ये तो ईश्वरीय वरदान है |
केंद्र-राज्य सम्बन्ध बनाकर, रिश्तों की नई जोड़ी डोर,
पंचायतों की स्थापना करता, शासन चला गाँव की ओर |
खर्चा होगा जाँच होगी, ऐसा लेखा-परीक्षक कहता है,
इतना खूबसूरत संविधान तो, ईश्वर ही दे सकता है |
मेरा भारत महान है, ये हमारी शान है,
संविधान कितना खूबसूरत है इसका, ये तो ईश्वरीय वरदान है |
प्रश्न उठाओ तुम जी भरकर, मेरा तिरंगा यूँ ही लहराएगा,
मेरा संविधान मेरा गौरव, हर भारतीय का मन गायेगा |
तिरंगे में लिपटकर कोई सपूत, जब घर आता है,
मन रोता है बहुत, ऐसा अवसर मेरे जीवन में क्यों नहीं आता है |
मेरा भारत महान है, ये हमारी शान है,
संविधान कितना खूबसूरत है इसका, ये तो ईश्वरीय वरदान है |
राष्ट्र के लिए कुछ कर सको, ऐसा मेरा संविधान कहता है,
अवसर मिला तो आगे रहूँगा, ऐसा मेरा मन कहता है |
मौत से नहीं लगता डर, राष्ट्र के लिए कुछ करना है,
संविधान का यही सन्देश, कुछ किये बिना क्या मरना है | - 2

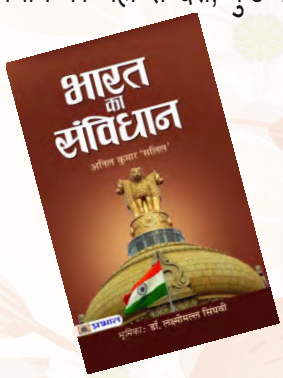

हेमाराम गहलोत
सहायक

नयी रोशनी

अभी और कितना समय लगेगा राकेश, दिल्ली पहुँचने में । बस 3 घंटे और फिर हमारी मंजिल आ जाएगी । तुमने पहली बार इतना लम्बा सफर तय किया है न इसलिए थोड़ा अजीब लग रहा होगा, धीरे-धीरे तुम्हें भी आदत हो जाएगी । सुमन शादी के बाद पहली बार राकेश के साथ दिल्ली जा रही थी । राकेश वहाँ बैंक में असिस्टेंट मैनेजर के पद पर कार्यरत थे । बैंक की तरफ से ही फ्लैट मिल गया था, तो अब शादी के बाद सुमन को भी अपने साथ दिल्ली लेकर जा रहे थे। सुमन, सोनपुर जैसे छोटे शहर की लड़की थी । उसके सारे सगे-सम्बन्धी आस-पास के शहरों में ही रहते थे इसलिए कभी इतनी दूर जाना भी नहीं हुआ था । दिल्ली पहुँचने पर वह स्टेशन पर इतनी भीड़ देखकर घबरा रही थी । किसी को उतरने की जल्दी थी तो किसी को ट्रैन पर चढ़ने की । लोग बस अपनी धुन में इधर-उधर भाग रहे थे ।

टैक्सी लेकर वे घर के लिए निकल गए । कितनी गाड़ियाँ चल रही है यहाँ, हमारे यहाँ तो गाड़ियों की इतनी भीड़ सिर्फ मेले या शादी के समय ही दिखाई देती है । सुमन की बात पर राकेश मुस्कुरा दिया । तीसरी मंजिल पर 2 बेडरूम, हॉल और किचन का फ्लैट था उनका । घर पहुँचकर दोनों फ्रेश हुए, फिर चाय-नाश्ता करने के बाद राकेश बैंक चला गया और सुमन सारे सामान को व्यवस्थित करने लगी । दोपहर में अपने अकेले के लिए क्या बनाये यह सोचकर उसने खाना ही नहीं बनाया और सोचा शाम को ही राकेश के साथ कुछ खा लेगी । राकेश के लौटने पर उसने चाय के साथ पकोड़े भी बना लिए । अरे सुमन, अभी मैं नाश्ते में ही इतना खा लूंगा तो रात का खाना कैसे खाऊंगा ? राकेश मुझे भूख लगी थी, दोपहर में कुछ खाया नहीं था ना । क्यों भई ? दोपहर में क्यों नहीं खाया तुमने । वो अपने अकेले के लिए क्या बनाती और अकेले खाने की आदत भी नहीं है मुझे । लेकिन सुमन ऐसा कब तक चलेगा, तुम्हें तो अब अकेले ही सब-कुछ करना है और खाने का अकेले होने से क्या सम्बन्ध है । भूख लगेगी तो खाओगी नहीं क्या ? देखो आज के बाद फिर कभी ऐसा मत करना । अपना ध्यान नहीं रखोगी तो तबीयत ख़राब हो जाएगी ।

रात को खाने के बाद दोनों बाहर टहलने के लिए चले गए, तो वहाँ श्वेता से मुलाकात हुई । राकेश भाई साहब, बहुत दिनों के बाद दिखाई दिए । जी हाँ ! वो घर गया था मैं इसलिए । अच्छा जी और ये आपकी पत्नी है, हमें मिलवायेंगे नहीं क्या ? जी क्यों नहीं, सुमन ये श्वेता जी हैं। हमारे ऊपर वाले फ्लैट में ही रहती है । सुमन ने उनसे नमस्ते की और बोली, श्वेता जी कैसी हैं आप ? मैं ठीक हूँ सुमन जी, कभी आइयेगा हमारे घर । यहाँ खुद को अकेला मत समझियेगा । कभी भी किसी चीज की जरुरत हो तो हमें याद कर लीजियेगा । चलिए अब मैं चलती हूँ । जी ठीक है । राकेश, श्वेता जी के पिता आपके बैंक में

काम करते है क्या ? नहीं, सुमन श्वेता जी के पति हैं सुरेश, वो मेरे साथ बैंक में काम करते है । क्या! श्वेता जी शादी-शुदा है । लेकिन उनके पहनावे से तो ऐसा नहीं लग रहा था । सुमन यहाँ सब ऐसे ही है, राकेश हँसकर बोला। जिसे जो अच्छा लगता है वो पहनता है, वो काम करता है । किसी तरह की कोई रोक-टोक नहीं है । अगली सुबह राकेश अपने बैंक चले गए और सुमन ने भी अपना काम खत्म कर लिया। घर की साज-सजावट भी पूरी हो गई थी । उसका यह रोज का रूटीन बन गया था । राकेश के जाने के बाद सुमन जल्दी ही फ्री हो जाती थी । सिर्फ दो लोग थे तो काम ज्यादा नहीं होता था । खाली समय होने पर वह फोन पर अपने घर या ससुराल में बात कर लेती थी ।

एक दिन श्वेता ने सुमन को अपने घर बुला लिया । बिल्डिंग की और औरते भी थीं । श्वेता ने सभी को सुमन से मिलवाया । कुछ औरतें वेस्टर्न कपड़ों में थीं तो कुछ ने सलवार-कमीज पहना हुआ था। सभी फैशनेबल लग रही थीं और अंग्रेजी में भी बातें कर रही थीं । सुमन ने हिंदी माध्यम से पढाई की थी। वो ग्रेजुएट थी, तो उसे अंग्रेजी समझ तो आ जाती थी, बस अंग्रेजी में कभी बात नहीं की थी उसने । वो थोड़ा असहज महसूस करने लगी थी । शाम को राकेश आये तो सुमन ने उन्हें सबकुछ बताया । पहले तो राकेश मुस्कुरा दिए, फिर उसे समझाया इसमें असहज होने की क्या बात है । वे शुरू से ऐसे संस्कृति में पली-बढ़ीं हैं, अंग्रेजी माध्यम से पढ़ाई की है, इसलिए वे ऐसी हैं और तुम्हारा घर, वहाँ की संस्कृति अलग है । वहाँ का रहन-सहन, विचार अलग है तो इतना अंतर तो होगा ही । वैसे भी अपनी मातृभाषा में बात करने से संकोच नहीं करना चाहिए । श्वेता से अच्छी दोस्ती हो गई थी उसकी । बैंक के एक कर्मचारी की शादी थी। सभी को न्यौता आया था पूरे परिवार के साथ । श्वेता ने सुमन से बोल दिया कि वो सब साथ में ही जायेंगे । लेकिन सुमन का मन थोड़ा अशांत था । यहाँ पहली बार किसी के घर ऐसे जाना था । सुमन, तुमने सोच लिया है ना क्या पहनोगी, किसी चीज की जरुरत हो तो बोलो । राकेश, वो मैं, सोच रही थी कि शादी में सिर्फ आप ही चले जाओ । क्यों ? ऐसा क्या हो गया । कुछ बात है तो बताओ मुझे । राकेश वहाँ आपके बैंक के सभी कर्मचारी आयेंगे और उनका परिवार भी । सभी लोग हाई-फाई होंगे और अगर किसी ने मुझसे अंग्रेजी में बात की तो मैं क्या करुँगी । मुझे ठीक नहीं लगता, मैं नहीं जाऊंगी । कैसी बात कर रही हो सुमन । तुम किसी से कम नहीं हो । मैंने तुम्हे समझाया था ना । यहाँ की संस्कृति, रहन-सहन अलग है । तुम जहाँ की रहने वाली हो वहाँ की संस्कृति, रहन-सहन अलग है । बस इसके लिए खुद को छोटा समझने की क्या आवश्यकता है। यदि तुमसे कोई अंग्रेजी में बात करे तो तुम हिंदी में जवाब दे देना । तुम्हे अंग्रेजी आती तो है बस बोलने की प्रैक्टिस नहीं है । इतना सोचने की जरुरत नहीं है। मैं हूँ ना तुम्हारे साथ ।

शादी में सभी लोग एन्जॉय कर रहे थे । औरतों ने अपना अलग ग्रुप बना लिया था और पुरूषों ने अलग । सब अपनी-अपनी हॉबीज, बच्चों की पढाई वगैरह के बारे में बातें कर रहे थे । सुमन ज्यादा कुछ बोल नहीं रही थी, बस सुन रही थी । राकेश की नजर उस पर गई तो वो उसके पास आ गए । मैंने आपको डिस्टर्ब तो नहीं किया ना । अरे नहीं भाई साहब आइये ना । आपकी सुमन तो बहुत शर्मीली लगती है, ज्यादा कुछ बोलती ही नहीं । आप लोगों से पहली बार मिल रही है ना इसलिए, नहीं तो घर में मुझे बोलने का मौका ही नहीं मिलता । सुमन जी ये तो बताइये राकेश जी के जाने के बाद आप क्या करती हैं, समय

कैसे बीतता है आपका । उसने बताया कि उसे पढ़ने का शौक है तो किताबें पढ़ लिया करती है और कभी-कभी थोड़ा-बहुत सिलाई का काम कर लेती है । अपने कपडों की सिलाई तो वो खुद ही कर लेती है और कुछ सजावट का सामान बनाना हो तो खुद कर लेती है । ये तो अच्छी बात है, हमें तो यहाँ-वहाँ दर्जी की दुकान ढूंढनी पड़ती है । राकेश आप भी ना कहीं भी कुछ भी बोलते हैं । अरे, मैं तो बस अपनी पत्नी की तारीफ ही कर रहा था । इसमें क्या गलत कर दिया मैंने । सुमन जी, आपसे कुछ पूछना चाहती थी । जी पूछिये श्वेता जी । वो हम सभी यह सोच रहे थे कि यदि आप हमारे बच्चों को पढ़ा सकेंगी तो । लेकिन, मेरा तो पढ़ाने का कोई तजुर्बा नहीं है, मैंने कभी किसी को नहीं पढ़ाया । देखिये सुमन जी, हमसे वो पढ़ाना-वढ़ाना नहीं होता और फिर बच्चों को ट्यूशन के लिए बाहर ले जाओ । आप तो बिल्डिंग में ही है तो उन्हें ज्यादा दूर भी नहीं जाना पड़ेगा और आपको तो पढ़ने का शौक भी है । मगर मैं ये सब कैसे कर पाऊँगी । ऐसा है तो अभी आप 1 महीने के लिए पढ़ा कर देख लीजिये । फिर यदि ठीक लगे तो आगे जारी रखियेगा । राकेश भी सुमन से कहने लगे और बाकी सब के इतना कहने पर वो मान गई ।

राकेश के ऑफिस जाने के बाद उसने भी अपना काम निबटा लिया और हॉल में ही पढ़ाने की तैयारी कर ली । बच्चों के साथ उसका भी मन लगने लगा । बच्चों की हिंदी कमजोर थी, क्योंकि अंग्रेजी माध्यम से पढ़ाई करने पर सारे विषय अंग्रेजी में ही लिखे होते हैं इसलिए हिंदी उन्हें थोड़ी कम समझ आती थी । सुमन को भी अजीब लगता था कि हिंदी हमारी मातृभाषा है और आज-कल के बच्चों को हिंदी की ही जानकारी कम है । सुमन हिंदी की अच्छी शिक्षिका साबित हुई और बच्चों की पढाई में भी काफी सुधार आया था । यह देखकर बिल्डिंग की औरतों ने उसे स्कूल में काम करने की सलाह भी दी । सुमन की कपड़ों की फिटिंग भी अच्छी होती थी तो सबने कपड़े सिलवाने के लिए भी उससे कहा । सुमन ने वो भी शुरू कर दिया । अब उसका समय कैसे बीतता था पता ही नहीं चलता था । राकेश भी उसकी इस उपलब्धि से खुश थे । सुमन ने जूनियर क्लास के बच्चों के स्कूल में इंटरव्यू दिया था । उसका वहाँ चयन भी हो गया । स्कूल में सभी उसे हिंदी शिक्षिका के नाम से बुलाते थे । देखा सुमन, जिस हिंदी भाषा को लेकर तुम संकोच करती थी । आज उसकी शिक्षा तुम बच्चों को दे रही हो और उनके माता-पिता भी इससे संतुष्ट हैं । तुम्हारी सिलाई की शिक्षा भी आज तुम्हें एक नई पहचान दे रही है । हर व्यक्ति एक जैसा नहीं होता है, सभी में अलग-अलग गुण होते हैं । हमें बस उन गुणों को देखना चाहिए । उन्हें अपनाकर आगे बढ़ना चाहिए । हाँ राकेश, और आपके साथ के बिना मैं ये सब नहीं कर पाती । आपने ही तो हौसला दिया है मुझे ।

सुमन अपनी जिंदगी में आए इस परिवर्तन से बहुत खुश थी । इस बड़े शहर की दुनिया में उसे एक नई रोशनी, एक नई पहचान मिल गई थी ।

नीलम कुमारी
सहायक

हमारी नागरी दुनिया की सबसे अधिक वैज्ञानिक लिपि है ।
- राहुल सांकृत्यायन

माँ

भगवान का स्वरूप होती है माँ,
देवी का रूप होती है माँ,
सृष्टि की रचयिता होती है माँ, क्या होती हैं माँ|

सृष्टि की परिभाषा होती है माँ,
संस्कारों की जननी होती है माँ,
इंसान की जन्मदाता होती है माँ, क्या होती है माँ|

बच्चों की पथप्रदर्शक होती है माँ,
ममता का सागर होती है माँ,
रोने पर अपने आंचल में छिपाले वह होती है माँ,
क्या होती है माँ|

सन्तान की प्रथम पाठशाला होती है माँ,
संतति की प्रथम गुरू होती है माँ,
जिसके आंचल में सारा संसार है वह होती है माँ,
क्या होती है माँ|

सबसे अच्छी दोस्त होती है माँ,
गिरता हूँ तो हाथ देकर सम्भाल लेती है माँ,
मेरा हौसला बन जाती है वह होती हैं माँ, और क्या बोलूँ,
इस दुनिया में सबसे अनमोल होती है माँ,
माँ होती हैं माँ, माँ होती हैं माँ|

ओमप्रकाश प्रजापत
प्रवर श्रेणी लिपिक

बेटियों का नसीब

बेटी बनकर आई हूँ माँ–बाप के जीवन में
बसेरा होगा कल किसी और के आँगन में,

क्यों ये रीत रब ने बनाई होगी,
कहते हैं आज नहीं तो कल बेटी पराई होगी।

देकर जन्म, पाल-पोसकर जिसने हमें बड़ा किया,
और वक्त आया तो उन्हीं हाथों ने हमें विदा किया।

टूट कर बिखर जाती है हमारी जिंदगी वहीं,
फिर उस बंधन में प्यार मिले, ये जरूरी तो नहीं,

रिश्ता हमारा इतना अजीब होता है
क्या, यही बेटियों का नसीब होता है।

मनमोहन मीना
सहायक

पत्रकारिता के बदलते स्वरूप

पत्रकारिता शब्द अंग्रेज़ी के "जर्नलिज़्म" (Journalism) का हिंदी रूपांतर है। शब्दार्थ की दृष्टि से 'जर्नलिज्म' शब्द 'जर्नल' से निर्मित है और इसका आशय है 'दैनिक' अर्थात जिसमें दैनिक कार्यों व सरकारी बैठकों का विवरण हो ।

पत्रकारिता आधुनिक सभ्यता का एक प्रमुख व्यवसाय है जिसमें समाचारों का एकत्रीकरण, लिखना, जानकारी एकत्रित करके पहुँचाना, सम्पादित करना और सम्यक प्रस्तुतीकरण आदि सम्मिलित हैं। आज के युग में पत्रकारिता के भी अनेक माध्यम हो गये हैं; जैसे - अखबार, पत्रिकाएँ, रेडियो, दूरदर्शन, वेब-पत्रकारिता, सोशल मीडिया आदि । बदलते वक्त के साथ बाजारवाद और पत्रकारिता के अंतर्संबंधों ने पत्रकारिता की विषय-वस्तु तथा प्रस्तुति शैली में व्यापक परिवर्तन किए हैं।

कल देश गुलाम था पत्रकार आजाद, लेकिन आज देश आजाद है और पत्रकार गुलाम। देश में गुलामी जब कानून था तो पत्रकारिता की शुरुआत कर लोगों के अंदर क्रांति को पैदा करने का काम हुआ। आज जब हमारा देश आजाद है तो हमारे शब्द गुलाम हो गए हैं। कल जब एक पत्रकार लिखने बैठता था तो कलम रुकती ही नहीं थी, लेकिन आज पत्रकार लिखते-लिखते स्वयं रुक जाता है क्योंकि जितना डर पत्रकारों को बीते समय में परायों से नहीं था, उससे ज्यादा भय आज अपनों से है।

गुलाम देश में अंग्रेजों का शासन था। तब कागज-कलम के जरिए कलम के सिपाही लोगों को यह बताने को आजाद थे कि गुलामी क्या है और लोग इससे किस प्रकार छुटकारा पा सकेंगे। पर आज अगर व्यवस्था से कोई परेशानी है तो उसके खिलाफ कोई आवाज नहीं उठा पाता और कोशिश करने पर निजी जरूरतों के आगे स्वयं को कमजोर पाते हैं। बीते समय में पत्रकारिता के प्रति लोग शौक से जुड़ते थे लेकिन आज यह शौक जरूरत का रूप ले चुका है और व्यवसाय की परिपाटी को फलीभूत कर रहा है।

पत्रकारिता के इस बदलते स्वरूप का जिम्मेदार केवल पत्रकार का स्वभाव और उसकी जरूरतें ही नहीं है वरन् इसका असली जिम्मेदार हमारा आज का पाठक-वर्ग भी है जो इस बदलते परिवेश के साथ इतना बदल गया है कि उसने समाचार-पत्र और पत्रकारों के शब्दों को एक कलमकार की भावनाओं से अलग कर दिया है। इसी का नतीजा है कि आज पत्रकार अपनी मर्जी से कुछ भी नहीं लिख सकता है क्योंकि वह अपने पाठक का गुलाम होता है और उसे वही लिखना पड़ता है जो उसका पाठक चाहता है। इससे अलग अगर कोई पत्रकार अपनी जीवटता दिखाते हुए खबर से तथ्यों को उजागर करने का मन बनाता भी है तो वह खबर समाचार-पत्र समूह के उसूलों और विज्ञापनों की बोली की भेंट चढ़कर डस्टबिन की शोभा बढ़ाती है। आज की पत्रकारिता पर बाजार और व्यवसाय का दबाव बढ़ गया है। जिस कारण

लोगों को जागरूक करने की अपनी आधारशिला से ही मीडिया भटक चुकी है और पेड न्यूज का रूप भव्यता से उभर कर आया है। मीडिया में 'पेड न्यूज' का बढ़ता चलन देश एवं समाज के लिए ही नहीं अपितु पत्रकारिता के लिए भी घातक है। 'पेड न्यूज' कोई बीमारी नहीं बल्कि बीमारी का लक्षण है। कहने को तो पत्रकारिता देश का चौथा स्तम्भ है। न्यायपालिका, विधायिका और कार्यपालिका जैसे देश के महत्वपूर्ण स्तंभों पर नजर रखने का कार्य करने वाली खबरपालिका आज अपने मूलकार्य से विमुख हो चुकी है। अपने प्रारम्भ में मिशन के तहत लोगों के बीच अपनी भूमिका का निर्वाह करने वाली पत्रकारिता समय के साथ बदलते हुए प्रोफेशन के रूप में भी परिवर्तित हुई। परिवर्तन प्रकृति का नियम है और मीडिया भी उसी का पालन कर रही है।

वर्तमान की पत्रकारिता को परिभाषित किया जाना हो तो उसे मानवीय संवेदनाओं को बेचने के अनवरत क्रम को शिद्दत से फैलाने के उपक्रम की संज्ञा दी जा सकती है। समाचार पत्र हो या फिर खबरिया चैनल सबमें आपस में टीआरपी की जंग छिड़ी हुई है, जिसके चलते सामाजिक सरोकारों से अलग केवल सामाजिक विषमता को फलने-फूलने का मौका मिल रहा है। मीडिया के इस चलन ने खबरों के प्रति पाठकों के नजरिये को बदल दिया है। अब पाठकों के बीच मीडिया सूचना देने के बजाय अपना विचार परोसने में लगी हुई है। मूलतः पत्रकारिता की प्रक्रिया ऐसी होती है जिसमें तथ्यों को समेटने, उनका विश्लेषण करने और फिर उसके बाद उसकी अनुभूति कर दूसरों के लिए अभिव्यक्त करने का काम किया जाता है। पत्रकारिता का कौन सा विकल्प चुनना है यह समाज को तय करना होता है।

शैलेश कुमार दास
सहायक

तेरे आने की राह

यूँ छेड़ कर तराने,दूर मत जाया करो
ऐ सर्दी के मौसम कभी सूरत में भी सूरत दिखाया करो।
यूँ छेड़ कर तराने,दुनियाँ को ठिठुराए
सबके गर्म कपड़े,गरम रजाई निकल आये,
पर तुझे सूरत की याद न आई।
हवाएं चलती रहीं, गर्मी की मार सी
तीव्र-क्षितिज,चंहुओर छाँह तलाशते
पक्षी-पथिक और ढोर।
न सूरत बदली,ना सीरत बदली
ना तरन्नुम,ना ही तराने बदले,
बस बेरंग मौसम सा रिश्तों के ताने-बाने बदले।
मौसम की मार सी,
बादल के क्षितिज में छुपते सूरज की तरह
जरा सी हवा क्या बदली हर रिश्ते के मायने बदले
तीर सी तीखी मौत के सन्नाटे में, जीवन के हर रूप
हर फ़िज़ा के मायने बदले।
एकाकी वीराने हो गए अब साथी
डर कुछ इस तरह पैबस्त है दिलो-दिमाग पर
कि हर दूसरा मौत का फरिश्ता दिखता है,
कोरोना का खबरी दिखता है।
गर्मी का आलम कुछ ऐसा हो चला है
हर तरफ बस वीराना दिखता है
ऐ सर्दी के मौसम ये 'रजनीश'
अब तो बस तेरे आने की राह ही तकता है।

रजनीश कुमार राजन
सहायक

घर की याद

घर जाता हूँ तो मेरा ही बैग मुझे चिढ़ाता है,
मेहमान हूँ अब, ये पल-पल मुझे बताता है |
माँ कहती है, सामान बैग में फ़ौरन डालो,
हर बार तुम्हारा कुछ ना कुछ छूट जाता है |
घर पहुँचने से पहले ही लौटने की टिकट,
वक़्त परिंदे सा उड़ता जाता है |
उंगलियों पे लेकर जाता हूं गिनती के दिन,
फिसलते हुए जाने का दिन पास आता है |
अब कब होगा आना सबका पूछना,
ये उदास सवाल भीतर तक बिखराता है |
घर के दरवाजे से निकलने तक,
बैग में कुछ न कुछ भरते जाता हूँ |
जिस घर की सीढ़ियां भी मुझे पहचानती थी,
घर के कमरे की चप्पे-चप्पे में बसता था मैं,
लाइट्स, फैन के स्विच भूल हाथ डगमगाता है |
पास-पड़ोस जहाँ बच्चा-बच्चा था वाकिफ,
बड़े-बुजुर्ग बेटा कब आया पूछने चले आते हैं |
कब तक रहोगे पूछ अनजाने में वो,
घाव एक और गहरा कर जाते हैं |
ट्रेन में माँ के हाथों की बनी रोटियां,
डबडबाई आँखों में आकर डगमगाता है,
लौटते वक़्त वजनी हो गया बैग,
सीट के नीचे पड़ा खुद उदास हो जाता है |
तू एक मेहमान है अब ये पल-पल मुझे बताता है..
मेरा घर वाकई मुझे बहुत याद आता है....

रणविजय कुमार
सहायक

ईएसआईसी : चिंता से मुक्ति

किरदार : किशन, किशन की पत्नी, किशन के पिताजी, गोपाल, गोविन्द, मालिक लक्ष्मीचंद, अन्य दोस्त, अन्य सह-कर्मचारी

सूत्रधार : किशन पहले अपने दोस्तों के साथ मजदूरी करता था । कुछ महीने बाद उसे एक मील में सुपरवाइज़र की नौकरी मिल गई है, वो बहुत ही खुश है, वो अपने घर पर मिठाई ले कर जाता है।

बीवी : बड़े खुश नज़र आ रहे हो, क्या बात है ?

किशन : पहले ये ले मुँह मीठा कर ।

बीवी : अब बताओ भी क्या बात है ?

किशन : मुझे सुपरवाइज़र की नौकरी मिली है, पता है, 12000 तनख्वाह दे रही है कंपनी ।

बीवी : ये तो बड़ी अच्छी बात है ।

किशन : पहली तनख्वाह से तेरे और बाबूजी के लिए नए कपड़े और बिटिया के लिए साईकिल लेंगे ।

बीवी : आपके लिए कुछ नहीं लोगे क्या ?

किशन : दूसरे महीने भी तो तनख्वाह आएगी, फिर बेटी को अच्छी स्कूल भेजेंगे और खूब पढ़ाएंगे ।

सूत्रधार : दूसरे दिन किशन नौकरी पर जाता है ।

मालिक : आओ किशन, कैसे हो ? 25 लोगों को सम्भालना है तुम्हे, संभाल तो लोगे ना ?

किशन : जी साहब ।

मालिक : और सुनो, कल अपने परिवार के साथ ईएसआईसी के शाखा कार्यालय में जाकर फोटो खिंचवा लेना ।

किशन : (सिर खुजलाता है) साहब फोटो खिंचवाना है तो फोटो स्टूडियो में जाएंगे ना, पीएसआई के कार्यालय क्यों जाए?

मालिक : अरे भाई, पीएसआई नहीं ईएसआईसी यानी कर्मचारी राज्य बीमा निगम ।

किशन : साहब ये क्या होता है ?

मालिक : किसी भी फैक्ट्री में जहां 10 से ज्यादा लोग काम करते हों वहाँ ईएसआई लागू होता है, जिसमें पंजीकृत होने पर ईएसआई के अस्पताल में मुफ्त चिकित्सा ले सकते हैं ।

किशन : साहब, मैं पहले जहाँ काम करता था वहाँ तो यह नहीं था ।

मालिक : ईएसआई में पंजीकरण न करवाना कानूनन जुर्म है । कुछ नियोक्ता मिथ्या दस्तावेज दिखाकर इससे बचने का प्रयास करते हैं, किन्तु उनको पता नहीं कि ऐसा करके वे अपने ही पैर पर कुल्हाड़ी मारते हैं । दूसरी बात अपना काम पूरी ईमानदारी से करना।

किशन : जी, साहब ।

सूत्रधार : किशन अपने काम पर लग जाता है जहां उसे 25 लोगों को सम्भालना है । काम के दौरान मील के दो कर्मचारी गोविन्द और गोपाल उसके दोस्त बन जाते हैं, वे तीनों हँसी-ख़ुशी अपनी नौकरी कर रहे थे । एक दिन जब लंच ब्रेक था तब तीनों साथ में बैठकर खाना खा रहे थे, तभी किशन मुस्कुराने लगा ।

गोविन्द : अरे भाई क्या बात है, क्यों मुस्कुरा रहे हो ? हमें भी बताओ हम भी मुस्कुरालें ।

किशन : कुछ नहीं यार, मेरा पुराना मालिक याद आ गया । बड़ा कंजूस था, इतना कंजूस इतना कंजूस की बात ही मत पूछो । वो जब भी नहाने बाथरूम में जाता, अपने नौकर को कपड़े दे देता और कहता कि जो भी झाग बाहर आये उसी से कपड़े धोना।

गोपाल : अरे ये तो कुछ भी नहीं है, मेरा पुराना मालिक इससे भी ज्यादा कंजूस था, वो जब मर गया और सब रो रहे थे, अरे बाप मर गया, अरे बाप मर गया । तभी मालिक खड़ा हो गया, सब वापस चिल्लाने लगे, बाप जिन्दा हो गया, बाप जिन्दा हो गया । तब मालिक बोला, "अरे भाई, चिल्लाना बाद में, पहले स्टोर रूम की स्विच बंद कर दो, बिजली का बिल बढ़ जाएगा और वापिस मर गया ।

सूत्रधार : ऐसे ही हँसी-ख़ुशी इनकी जिंदगी गुजर रही थी, तभी एक दिन गोपाल के चिल्लाने की आवाज़ आई । (गोपाल गिर जाता है, किशन और गोविन्द दौड़कर वहाँ आते हैं)

किशन : गोपाल, क्या हुआ गोपाल ?

गोविन्द : लगता है, इसे करंट लगा है ।

किशन : गोविन्द, तुम गोपाल को लेकर बाहर जाओ । मैं यह मशीन बंद करके आता हूँ ।

{गोविन्द गोपाल को लेकर बाहर जाता है अंदर से किशन के चिल्लाने की आवाज़ आती है और किशन बेहोश हो जाता है । तीन दिन बाद जब उसे होश आता है तो वह अपने आपको अस्पताल में पाता है}

किशन : पिताजी, मेरे दोस्त गोविन्द और गोपाल कहाँ हैं ?

पिताजी : गोविंद अभी आता ही होगा, हर रोज़ रात को वो ही तेरे पास यहाँ अस्पताल में रहता है ।

किशन : और गोपाल ?

पिताजी : वो नहीं बच पाया, अस्पताल में लाने से पहले ही उसने दम तोड़ दिया ।

किशन : मैंने बोला था उसे बाहर आने को । मै उसे बचा नहीं पाया । डॉक्टर ने मेरे बारे में क्या बताया? मै कब से काम पर जा सकूंगा ?

{थोड़ी देर के लिए सन्नाटा छा जाता है }

किशन : पिताजी बताइये ना, क्या कहा डॉक्टर ने ?

पिताजी : बेटे तू चिंता मत कर मैं जाऊंगा तेरी जगह काम पर

{ किशन अपने हाथ की तरफ देखता है, उसके दोनों ही हाथ काट दिए गए थे}

किशन : जवान बेटे के होते हुए बाप को काम करना पड़े, ये दिन देखने से अच्छा होता मैं भी उस हादसे में मर जाता ।

{तभी कंपनी का मालिक आता है }

मालिक : कैसे हो किशन ?

{किशन कुछ जवाब नहीं देता }

मालिक : तुम्हें पता है, मैंने तुम्हें ईएसआई के बारे में बताया था ?

{किशन फिर कुछ जवाब नहीं देता }

मालिक : बात ऐसी है कि रोजगार के दौरान रोजगार के कारण हुई दुर्घटना के मामलों में ईएसआईसी द्वारा अपंगता हितलाभ दिया जाता है, जिसके लिए मेडिकल बोर्ड होता है। तुम्हें भी परसों मेडिकल बोर्ड में जाना है ।

किशन : उसमें क्या होगा ?

मालिक : तुम्हारी चोट की जांच होगी और अपंगता के प्रतिशत के आधार पर तुम्हें आजीवन पेंशन मिलेगी ।

किशन : गोपाल तो जिन्दा नहीं है तो क्या इसका मतलब उसके परिवारवालों को कुछ नहीं मिलेंगा ।

मालिक : उसकी पत्नी और बेटी को ईएसआई उसकी तनख्वाह का 90 प्रतिशत देगा ।

किशन : कब तक ?

मालिक : उसकी पत्नी को आजीवन 54% और बेटी को शादी तक 36%

सूत्रधार : दो दिन बाद मेडिकल बोर्ड में किशन की 100% अपंगता घोषित की जाती है । किशन को अब हर माह 10800 रूपये ईएसआई की ओर से पेंशन स्वरुप प्राप्त होंगे ।

गली के लड़के रमेश, सुरेश और महेश, किशन को मिलने आते हैं और कहते हैं कि हम भी अपने मालिक को कहेंगे कि हमें भी ईएसआई के अंदर पंजीकृत करवाये ।

विमलेशकुमार ठक्कर
सहायक

राष्ट्रभाषा के बिना राष्ट्र गूंगा है ।

- महात्मा गांधी

मंदिर है माँ का निराला

मंदिर है माँ का निराला, पूजा भी निराली है ।
डूबी नैया मझधारा, माँ पार लगाने वाली है ।
ना कोई इसमें धूप जले, ना कोई इसमें दीप जले।
जो कोई किताबों मे खो जाए, उसकी ही पूजा फले।
जो विद्या मंदिर ना जाये दुनिया उसकी काली है।
मंदिर है माँ का निराला....
माता ने कहा अपने भक्तों से, पढ़ना तुम्हारा, पूजा है मेरी।
जो कोई पूजा करे ध्यान से, फल देने में नहीं होती देरी।
जिसने माँ का वर पाया, उसके घर खुशहाली है।
मंदिर है माँ का निराला.....
ना कोई चोर चुराए इसको, ना कोई बाँट के ले जाए।
ज्यों-ज्यों खर्च करोगे इसको, त्यों-त्यों संचित होती जाए।
जिस घर में हो माँ का बसेरा, उसमे रोज दीवाली है।
मंदिर है माँ का निराला .....
रोजी-रोटी छीनी जगत से, विद्या बिन कुछ नहीं कर पाया।
जिसके सिर पर माँ का साया, वो नर ही भवसागर तर पाया।
डूबी नैया मझधारा में, माँ पार लगाने वाली है ।
मंदिर है माँ का निराला .....
माता के मंदिर में, झूठ का कोई काम नहीं।
जिसने झूठ–पाप का लिया सहारा, उसका बेड़ा पार नहीं।
माता है तो जीवन है उजाला वरना जीवन की रातें काली हैं।
मंदिर है माँ का निराला.....

राकेश कुमार मीना
प्रवर श्रेणी लिपिक

पर्यावरण का बचाव

गौर से देखो, अपनी आँखें खोलो,
बेजुबान पर्यावरण, हमसे कुछ कह रहा |
कटते वृक्ष, बढता तापमान, प्रदूषित हवा,
बदलते पर्यावरण के यही हैं गवा ||

अस्थमा, ल्यूकेमिया आदि
बीमारियों ने ली है बहुतों की जान,
अब न रहो तुम इस
पर्यावरण के दोहन से अनजान |
अवांछित ईंधन के प्रयोग से
काला हो गया आसमान,
सब जीव-जंतु हो रहे परेशान,
नहीं समझ रहे हम इंसान ||

ऊर्जा के संसाधनों का किया
हमने दुरूपयोग जमकर,
परिणाम कैसे होता हमारे
स्वास्थ्य के लिए हितकर |
पर्यावरण की क्या कर रहे हैं, हम दुर्दशा,
क्योंकि चढ़ गया हम पर आलस का नशा ||

चलिए आज से हम सब लें एक प्रण,
क्योंकि पर्यावरण को बचाना है हम सब का धर्म |
बेहतर पर्यावरण और स्वास्थ्य का तभी होगा निर्माण,
जब हम सब मिलकर करें पर्यावरण का बचाव ||

आशीष चक्रवर्ती
प्रवर श्रेणी लिपिक

आत्महत्या किसी समस्या का समाधान नहीं

आत्महत्या किसी समस्या का समाधान नहीं, आत्महत्या करना कायराना या कायरता का प्रतीक है। समस्याएँ, विकट हालात, चुनौतियां, प्रतिकूल परिस्थितियाँ, असफलता, दु:ख, संकट आदि जीवन के अभिन्न अंग है, इन्हें हम रोक नहीं सकते हैं। ईश्वर हमारी अनेक तरह से परीक्षा लेता है। हमें धैर्य, संयम, धीरज का परिचय देते हुए इनका सामना करना चाहिए ।

हमारी परिस्थितियाँ प्रतिकूल हो सकती हैं चाहे वो सामाजिक, पारिवारिक, आर्थिक कोई भी हो, लेकिन समय हमेशा एक जैसा नहीं रहता है। समय के साथ बहुत कुछ बदलता है। कुछ समय बाद जीवन में सुकून, शांति, सफलताएँ भी आती हैं । जीवन सुख-दु:ख नामक दो घटकों के बीच चलता रहता है। हमें हर परिस्थिति में एक जैसा बने रहना चाहिए । क्षणिक हताशा और निराशा हमें जीवन समाप्त करने हेतु उकसाती है। लेकिन यह कदम बहुत घातक होता है। देश, समाज, परिवार को हमसे बहुत उम्मीद है और हमें सभी की उम्मीद के अनुरूप आचरण करना चाहिए। माता-पिता अपने बच्चों का पालन-पोषण बड़े विकट हालातों से जूझते हुए करते हैं। उनकी उम्मीदों पर पानी फेरने का अधिकार हमें नहीं है।

आज की युवा पीढ़ी तेज गति से गलत दिशा में आगे बढ़ रही है। यही कारण है कि जल्दी ही अवसाद से कुंठित होकर आत्महत्या जैसे घिनौने कदम उठाकर समाज में बहुत ही गलत संदेश दे कर जाते हैं। हमारा जीवन बहुत अनमोल है और हम पर बहुत से लोगों का हक है इसलिए कभी भी क्षणिक आवेश में आकर जीवन को समाप्त नहीं करना चाहिए । हमारे पूर्वजों ने युगों-युगों से विदेशी आक्रांताओं के शोषण को सहन किया है। डटकर मुक़ाबला किया, अभाव में रहकर भी कभी आत्महत्या जैसे कदम नही उठाये। लेकिन दुर्भाग्य और चिंतनीय बात है कि हमारे आस-पास ये घटनाएँ आज आम हो चुकी हैं।

हम सब की ज़िम्मेदारी बनती है कि हम सकारात्मक सोच रखें, नकारात्मक लोगों से दूर रहें, संस्कारित बने, सभी का सहयोग करें, किसी की खुशी का माध्यम बने, ऐसा कोई कदम न उठायें और ना ऐसा कोई कार्य करें, जिससे हमें या हमारे माता-पिता को सर झुकाना पड़े।

यह हमारा दायित्व है कि यदि हमें कोई साथी किसी अवसाद या परेशानी में लगे तो उसके साथ बात कर उसे संतुलित करने का प्रयास करें। यदि किसी के कोई समस्या है या परेशानी है तो अपने दोस्तों, अपने विश्वास-योग्य व्यक्तियों के साथ अपनी बात अथवा अपनी समस्या खुल कर साझा करें ताकि आपका उचित मार्गदर्शन हो सके।

हमारे देश के उच्चतम पदों पर विराजमान लोगों ने कई असफलताओं का सामना किया है। न जाने किन हालातों से झूझते हुए, धैर्य और संयम रखते हुए सफलता के मुकाम तक पहुंचे हैं।

प्रत्येक सफल इंसान के पीछे कई रहस्यात्मक कहानियाँ हैं। इसलिए अपनी विपरीत परिस्थितियों से मुक़ाबला करें .....हिम्मत ना हारे.....।

इन पंक्तियों से हमेशा प्रेरित होते रहिए :

असफलता एक चुनौती है, इसे स्वीकार करो।
क्या कमी रह गयी, देखो और सुधार करो ।।
जब तक ना हो सफल नींद चैन को त्यागो तुम ।
संघर्ष का मैदान छोड़कर मत भागो तुम ।।
कुछ किए बिना ही जय-जयकार नहीं होती ।
कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती ।।

रमेश कुमार
सहायक

आज का समय

मियां-बीबी दोनों मिल खूब कमाते हैं,
दस-दस लाख का पैकेज दोनों ही पाते हैं।
सुबह आठ बजे नौकरियों पर जाते हैं,
रात ग्यारह तक ही वापस आ पाते हैं।
अपने परिवारिक रिश्तों से कतराते हैं,
अकेले रह कर ही वे कैरियर बनाते हैं।
कोई कुछ मांग न ले वो मुंह छुपाते हैं,
भीड़ में रहकर भी अकेले रह जाते हैं।
मोटे वेतन की नौकरी छोड़ नहीं पाते हैं,
अपने नन्हे-मुन्ने को भी पाल नहीं पाते हैं।
फुल टाइम की मेड एजेंसी से लाते हैं,
उसी के जिम्मे वो बच्चा छोड़ जाते हैं।
परिवार को बच्चा उनका नहीं जानता है,
केवल 'आया-आंटी' को ही पहचानता है।
दादा-दादी, नाना-नानी कौन होते हैं,
अनजान है सबसे किसी की नहीं मानता है।
आया ही नहलाती है, आया ही खिलाती है,
टिफिन भी रोज़-रोज़ आया ही बनाती है।
यूनिफार्म पहना के स्कूल कैब में बिठाती है,
छुट्टी के बाद कैब से आया ही घर लाती है।
नींद जब आती है तो आया ही सुलाती है,
जैसी भी उसको आती है लोरी सुनाती है।
उसे सुलाने में अक्सर वो भी सो जाती है,
कभी जब मचलता है तो टीवी दिखाती है।

वीक एन्ड पर मॉल में पिकनिक मनाता है,
संडे की छुट्टी मॉम-डैड के संग बिताता है।
वक्त नहीं रुकता है तेजी से गुजर जाता है,
वह स्कूल से निकल कर कॉलेज में आता है।
कान्वेन्ट में पढ़ने पर देश कहाँ भाता है,
आगे पढ़ाई करने वह विदेश चला जाता है।
वहाँ नये दोस्त बनते हैं उनमें रम जाता है,
मां-बाप के पैसों से ही खर्चा चलाता है।
धीरे-धीरे वहीं की संस्कृति में रंग जाता है,
मॉम-डैड से रिश्ता पैसों का रह जाता है।
कुछ दिन में उसे काम वहीं मिल जाता है,
जीवन साथी शीघ्र ढूंढ वहीं बस जाता है।
माँ-बाप ने जो देखा ख्वाब वो टूट जाता है,
बेटे के दिमाग में बस कैरियर रह जाता है।
क्यों इतना खपाया खुद को ये सोच के पछताते हैं,
घुट-घुट कर जीते हैं खुद से भी शरमाते हैं।
हाथ-पैर ढीले हो जाते, चलने में दुख पाते हैं,
दाढ़-दाँत गिर जाते, मोटे चश्मे लग जाते हैं।
कमर भी झुक जाती, कान नहीं सुन पाते हैं,
वृद्धाश्रम में दाखिल होकर, जिंदा ही मर जाते हैं।
ऑनलाइन पर हो गए, सारे लाड-दुलार,
दुनियां छोटी हो गई, रिश्ते हो गए बीमार ।

भावना सोलंकी
(धर्मपत्नी श्री रमेश कुमार, सहायक)

वक्त नहीं

हर खुशी है लोगों के दामन में पर,
एक हंसी के लिए वक्त नहीं...
दिन-रात ढूंढती दुनिया में,
जिन्दगी के लिए वक्त नहीं...

माँ की लोरी का अहसास तो है पर,
माँ को माँ कहने का वक्त नहीं...
सारे रिश्तों को तो मार ही चुके,
अब दफनाने के लिए वक्त नहीं...

सारे नाम मोबाईल में हैं पर,
दोस्तों के लिए वक्त नहीं...
गैरों की क्या बात करें जब,
अपनों के लिए ही वक्त नहीं...

दिल है गमों से भरा पर,
रोने के लिए भी वक्त नहीं...
पैसों की धुंध में ऐसे डूबे कि,
थकने के लिए भी वक्त नहीं...

पराये अहसानों की क्या कदर करें,
जब अपनों के लिए भी वक्त नहीं...
तू ही बता ऐ जिन्दगी इस जिन्दगी का क्या होगा
हर पल मरने वालों को जीने के लिए भी वक्त नहीं...

अरमान

एक सपना जो सोने नहीं देता,
एक उम्मीद जो उम्मीद खोने नहीं देती,
एक मंजिल जिसकी राह इतनी खास है,
खास इतनी की राह खत्म होने नहीं देती ।
एक ख्वाब जो सभी का ख्वाब है,
एक चाह जो बेहिसाब है,
एक जुनून जो सर पे सवार है,
एक भरोसा जो मुझपे निसार है ।
एक समंदर जिसका किनारा दिखाई नहीं देता
पर विश्वास ऐसा कि किनारा खोने नही देता
साहिल की आस में चले जा रहे हैं,
रास्ते काँटो से भरे ही सही ।
सुना है ये मंजिल जिंदगी बदल देती है,
और आकांक्षा का सबब भी नहीं,
अगर परिणाम इतने सुखकर हों तो
कठिनाईयों का गम भी नही ।
उस नाम को उस जगह देखने के लिए दिल बेकरार है,
बेकरारी ऐसी कि उस जगह के लिए जान निसार है ।
लंबा सफर, उससे लंबा इंतजार,
मेहनत और सिर्फ मेहनत ही लगाएगी पार,
उस कामयाबी के लिए ऐसी कई मेहनत कुर्बान है,
मेहनत रंग लाएगी दिल का ये अरमान है ।

नरेश कुमार मीना
प्रवर श्रेणी लिपिक

दासवृत्ति को सभ्यता की पहचान मत बनाइए

सरकारी कामकाज की भाषा बदलने में दो तत्त्व कार्य करते हैं- दृढ इच्छाशक्ति और जनप्रतिनिधियों की मनोवृत्ति। दृढ इच्छाशक्ति का उदाहरण है- तुर्की के शासक कमालपाशा की इच्छाशक्ति और जनप्रतिनिधियों के दबाव का उदाहरण है- इंग्लैण्ड में फ्रेंच को हटाकर अंग्रेजी को सरकारी कामकाज की भाषा बनाना। शासन सँभालने के साथ ही कमालपाशा ने अपने अधिकारियों से पूछा - सरकारी कामकाज की भाषा तुर्की को बनाने में कितना समय लगेगा? "कम से कम दस वर्ष" उपस्थित अधिकारियों का मत था, "समझ लो कल प्रातः दस वर्ष समाप्त हो गए" कमालपाशा का दृढ स्वर गूँजा और 24 घण्टों के भीतर अंग्रेजी के स्थान पर तुर्की राजभाषा बन गई। भारत में ऐसा न हो सका, कारण हमारे शासकों में दृढ इच्छाशक्ति का अभाव तथा संतुष्टिकरण की आत्मघाति राजनीति । इस संदर्भ में इंग्लैण्ड का उदाहरण विशेष रोचक एवं शिक्षाप्रद है, साथ ही आवश्यक भी है क्योंकि वह अंग्रेजी के पक्षधर वर्ग की आँखे खोल देगा।

ईसवी सन् के पहले से ईसा की प्रथम शती तक, इंग्लैण्ड के दक्षिणी भाग पर रोमन लोगों का अधिकार था और अभिजात्य एवं शिक्षित वर्ग की भाषा लैटिन हो गई थी। यह भी ज्ञातव्य है कि अंग्रेजों की अपेक्षा रोमन उन दिनों कहीं अधिक सभ्य थे, इंग्लैण्डवासी कबीलों के रूप में रोमन लोगों से लड़ते थे, प्रसिद्ध लैटिन लेखक टेसिटस ने एग्रिकोला नामक रोमन सेनापति पर एक पुस्तक लिखी है जिसमें बताया गया है कि उसने ईसा की प्रथम शती में किस प्रकार इंग्लैण्डवासी अंग्रेजों को वश में किया था और रोमनों की भाषा लैटिन ने उस कार्य में कितनी महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन किया था। इससे स्पष्ट हो जाता है कि चतुर विजेता इस प्रकार पराधीन जाति को गुड़ में विष मिलाकर उनमें अपनी भाषा और संस्कृति का प्रचार करके उन्हें अपना अनुवर्ती बना लेते हैं।

एग्रीकोला ने ब्रिटेन के लोगों को अपनी सभ्यता, परिधान, भोजन का तरीका और भाषा सिखाकर मानसिक दासता उत्पन्न कर दी। अंग्रेजों ने अवसर मिलने पर ठीक यही पद्धति भारत में अपनाई। उनके चले जाने के बाद भी हम उनके मानसिक दास बने हुए हैं। अंग्रेजों की इस नीति का परिणाम यह हुआ कि जिस प्रकार सारे यूरोप के शिक्षित वर्ग की भाषा लैटिन हो गई थी, उसी प्रकार ब्रिटेन के उपनिवेशों में शिक्षित वर्ग की भाषा अंग्रेजी हो गई, रोमन साम्राज्य समाप्त होने के बाद भी कई सदियों तक लैटिन सम्पूर्ण यूरोप के ज्ञान का माध्यम बनी रही थी, सभी देशों के विद्वान अपनी पुस्तकें लैटिन में लिखते थे, सर आइजक न्यूटन सदृश्य महान् अंग्रेज विद्वान गणितज्ञ, विचारक और वैज्ञानिक ने अपनी पुस्तकें लैटिन में लिखी थी। न्यूटन की मृत्यु के समय तक यूरोप में साहित्य के क्षेत्र में लैटिन का बोलबाला था।

सन् 1088 में इंग्लैण्ड को फ्रांस के नोरमन लोगों ने जीत लिया, धीरे-धीरे सारा राजकाज फ्रेंच भाषा में होने लगा। इंग्लैण्ड की जनता फ्रेंच नहीं जानती थी, उनकी लगातार माँग पर सन् 1362 में एक अधिनियम बनाया गया जिसके अनुसार वकीलों का आवेदन, जिरह आदि अंग्रेजी में करने की छूट थी, चूँकि वकीलों का विधि का शिक्षण फ्रेंच में हुआ था, इसलिए अधिनियम के बावजूद कई शताब्दियों तक न्यायालयों में फ्रेंच ही चलती रही, पाठक समझ रहे होंगे कि ठीक यदि यही स्थिति भारत में है तो इसमें अस्वाभाविक एवं अनुचित कुछ नहीं है। इंग्लैण्ड में इस बीच अंग्रेजी को न्यायालय की भाषा बनाने के लिए जनता की माँग उग्र हो गई तो सरकार ने सन् 1731 में न्यायालयों में अग्रेजी भाषा का प्रयोग अनिवार्य कर दिया, साथ ही लैटिन और फ्रेंच भाषाओं का उपयोग वर्जित कर दिया, इस आदेश का उल्लंघन करने वालों पर 50 पौंड जुर्माने का भी प्रावधान कर दिया गया, तब कहीं जाकर तीन-चार सौ वर्षों बाद अंग्रेजी को उसका नैसर्गिक स्थान प्राप्त हुआ।

इसी संदर्भ में रोजर नार्थ नाम के एक विधिवेत्ता ने कहा था कि इंग्लैण्ड के कानून अंग्रेजी में ठीक तरह से व्यक्त नही किए जा सकते और लैटिन तथा फ्रेंच के विधि साहित्य को पढ़े बिना कोई पैराकार भले ही बन जाए, किन्तु वकील नहीं बन सकता, ठीक ऐसी ही बातें हमारे यहाँ कही जाती रही हैं, परन्तु इंलैण्ड के निवासी अपनी अस्मिता के प्रति हमारी तरह बेखबर नहीं थे।

अंग्रेजी भाषा की इन समस्त कमियों और अंग्रेजी में विधि साहित्य के अभाव के बावजूद अंग्रेज जनता के देशप्रेम और अपनी भाषा के प्रति निष्ठा ने समस्त कठिनाइयों को नकार दिया और न्यायालयों में अंग्रेजी भाषा चल निकली। शीघ्र ही विधि सम्बन्धी पुस्तकें भी प्रस्तुत हो गईं और आज अंग्रेजी भाषा की सर्वतोन्मुखी सम्पन्नता सर्वविदित है। अंग्रेजी भाषा की स्थापना का उक्त विवरण हमारे लिए सर्वथा शिक्षाप्रद होना चाहिए। हमारे सरकारी कर्मचारी एवं वकील यदि अंग्रेजी से चिपके हुए हैं तो कोई आश्चर्य की बात नही हैं। आश्चर्य की बात तो यह है कि हमारी जनता में अपेक्षित देश-प्रेम का अभाव है और वह अपनी भाषा को उसका जन्मसिद्ध अधिकार दिलाने के प्रति जागरूक नहीं है।

हमें समझ लेना चाहिए कि बद्धमूल परम्पराओं को समाप्त करने में पर्याप्त समय लगता है, इसके लिए दृढ संकल्प करने में पर्याप्त समय लगता है, इसके लिए दृढ संकल्प एवं अनवरत् प्रयास अपेक्षित रहते हैं और अपेक्षित होती है मानसिक दासता से मुक्ति की भावना। हमारी युवा पीढी का कर्तव्य है कि वह तथाकथित सभ्यता के आवरण को हटाकर वास्तविकता को जानने का प्रयत्न करे और अस्मिता की पहचान स्थापित करने के लिए मानसिक दासता की ओर से विमुख हो जाए। जो स्वतंत्र रहना चाहते हैं उन्हें कोई भी शक्ति गुलाम नहीं बना सकती है, ऐसी नौबत नहीं आनी चाहिए कि अंग्रेजी भाषा प्रयोग से चिपके रहने वालों को दंडित करने के लिए कानून बनाने की आवश्यकता हो।

राम सिंह भाटी
अवर श्रेणी लिपिक

हिंदी आम बोलचाल की 'महाभाषा' है।
- जॉर्ज ग्रियर्सन

हसरतें

हसरतें
प्रेरणा जीवन की
सीखाती जीना
करती बैचेन
पाने को जो मिला नहीं
तो क्या
पा लेने से मिट जाती हैं
ये हसरतें,
वरन बढ़ती जाती
सुरसा के मुख जैसे
ये हसरतें
बन जाती हैं वासना
छीन लेती
खुद को हमीं से
पराधीन बना देती,
रखें इक हसरत ऐसी
सहज-सौम्य जीने की
जीवन देने,
खुश रहने औ करने की,
पा सकते हैं हम
कुछ देकर भी
नि:स्वार्थ,
रखें हसरत ऐसी
हो जाए जीवन पूर्ण
और रह जाए बाकी
हसरतें।

वह आवाज..

आवाज एक
मेरे लिए
अस्पष्ट पर जानी-पहचानी सी,
लगा उस सर्वद्दष्टा की
है पुकार,
मैं,
निमित्त साधन मात्र
सुनना चाहता हूँ उसे
लेकिन व्यर्थ
सुन नहीं पा रहा
वह सद्दा-वह प्रेरणा
कुछ करने की महान
बनना ऐसी आवाज
जाए जो सुदूर
इसलिए
सुनना चाहता हूँ
वह आवाज।

अमित इन्दौरिया
वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी

राष्ट्र निर्माण

हम एक ऐसे समाज में जीते हैं,
जहाँ पत्थर की मूरत को लगते हैं 56 भोग
और भूखे, नंगे, तड़पते सो जाते हैं लोग
मजदूर को मजदूर समझिए, मजबूर नहीं,
गरीब को काम दीजिये दान नहीं
अगर दान देने के इच्छुक हैं तो,
जीते-जी रक्तदान और मरने के बाद अंगदान देकर
किसी मरते हुए को जीवनदान दीजिये
यही सच्ची देशभक्ति और यही सच्चा राष्ट्र प्रेम है
ना सरकार मेरी है ना रब मेरा है
और ना ही यह बड़ा सा नाम मेरा है
बस इतनी सी बात का गुरूर है मुझे कि मैं भारत का हूँ
और यह भारत मेरा है ।

परंतु एक वैचारिक बीमारी हमारे समाज में मुझे नजर आती है । कहा जाता है कि हम दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र हैं । जहाँ हिंदू पैदा होते हैं, मुस्लिम, सिक्ख और ईसाई भी पैदा होते हैं लेकिन बदकिस्मति है कि अब इंसान पैदा नहीं होते हैं । मेरे विचारो में ना हिंदू की जरूरत है ना मुसलमान की, जरूरत है राष्ट्र निर्माण के लिए केवल अच्छे इंसान की । जरा सोचकर देखिए- यह पेड़-पौधे और शाखाएँ भी परेशान हो जाएँ अगर परिंदे भी हिंदू और मुसलमान हो जाएँ । एक शैक्षणिक बीमारी भी हमारे समाज में मुझे नजर आती है और बड़े आश्चर्य की बात है जिस देश ने पूरी दुनिया को तक्षशिला और नालंदा देकर विश्व आध्यात्म शिक्षा की बुनियाद रखी । आज उसके शीर्ष विश्वविद्यालयों में हमारा एक भी विश्वविद्यालय खड़ा नहीं हो पाता । इस बीमारी का केवल एक कारण है कि हमारे देश की शिक्षा नीति केवल दो तरह के लोगों के लिए बनती है पहले वो जो विद्वान हैं, दूसरे वो जो धनवान हैं । इसी तरह की कई गज़ब तरह की बीमारियाँ है जिसकी जड़ हमारा अन्धविश्वास है । मेरे विचारों में जब तक इस देश का युवा अपनी सफलता के लिए मंदिरों में जाकर नारियल फोड़-फोड़कर भगवान को रिश्वत देता रहेगा, शिक्षित वर्ग ही बिल्ली के रास्ता काटने पर खड़े हो जाना अपना धर्म समझता रहेगा और अपने धर्म को ऊँचा मानकर दूसरे धर्म की अवहेलना करता रहेगा, तब तक ना तो इस देश से अन्धविश्वास ख़त्म होगा

और ना ही हमारा राष्ट्र निर्माण संभव होगा । हमारी संस्कृति, हमारी सभ्यता को दुनिया ने शीष नवाया तो क्यों आस्था के नाम पर हमने अन्धविश्वास फैलाया है । मेरे विचारों में हमारा राष्ट्र निर्माण तब संभव होगा जब इस देश में महिलाओं की पूजा नहीं बल्कि उनकी इज्जत की जाएगी, राष्ट्र निर्माण तब संभव होगा जब हम जाति सरंक्षण पर नहीं बल्कि सामाजिक सशक्तिकरण पर बात करेंगे । राष्ट्र निर्माण तब संभव होगा जब स्वच्छता अभियान केवल सरकार नहीं बल्कि सड़क पर चलने वाला हरेक नागरिक स्वछता अभियान में हाथ बंटायेगा तथा स्वच्छ भारत को दिल से अपनायेगा । असल मायने में राष्ट्र निर्माण तब संभव होगा जब एक गरीब बच्चा मध्याह्न भोजन के लिए नहीं बल्कि ज्ञानार्जन के लिए सरकारी स्कूल की चौखट पर कदम रखेगा और हमारा राष्ट्र निर्माण तब तक संभव नहीं होगा जब तक एक नागरिक चारित्रिक रूप से चरित्रहीन, मानसिक रूप से दिवालिया, धार्मिक रूप से अंधा, राजनैतिक रूप से भ्रष्ट, स्वैच्छिक मान-मूल्यों के आँकड़ों में जीर्ण-शीर्ण रहेगा तब तक हमारा राष्ट्र निर्माण संभव नहीं होगा । बड़ी-बड़ी बातें नहीं, छोटी-छोटी कोशिशें करनी होंगी क्योंकि ठोकर हमें पहाड़ से नहीं पत्थरों से लगती है ।

मैं सैल्यूट करना चाहूँगा, सरहद पर दिन-रात हमारी रक्षा के लिए खड़े उस जवान को, इस देश की पुलिस, प्रशासन, किसान को और इस देश के उस व्यक्ति को जो अपना काम पूरी ईमानदारी, पूरी मेहनत, पूरी लगन से करते हैं जिसके बिना राष्ट्र निर्माण की कल्पना करना भी असंभव सा लगता है। मैं आज इस देश के प्रत्येक नागरिक को कहना चाहूँगा कि हमारा राष्ट्र निर्माण तब संभव होगा जब मैं, आप और हम सभी मिलकर प्रयास करेंगे क्योंकि यह जिम्मेदारी हमारे देश की नहीं, बल्कि हमारी है ।

अंत में मैं यही कहना चाहूँगा कि मेरा हिंदुस्तान महान था, महान है, महान रहेगा क्योंकि " सारे जहाँ से अच्छा हिंदुस्तान हमारा" ।

गोविंद राम
प्रवर श्रेणी लिपिक

हिंदी उन सभी गुणों से अलंकृत है जिनके बल पर वह विश्व की साहित्यिक भाषाओं की अगली श्रेणी में सभासीन हो सकती है ।

- मैथिलीशरण गुप्त

मजहब

मजहब में फंसा नादान इंसान है,
तेरा केसरी- मेरा हरा भगवान है।

गीता, बाईबल और कुरान है,
फिर भी जिंदा नहीं इंसान है।

अब सरकारी नौकरी काम है,
बस उस बंदे को ही सलाम है।

इतना सा इश्क का मुकाम है,
राधा के बाद कृष्ण का नाम है।

शानो-शौकत दिखावा प्रधान है,
मेरा भी शहर के बीच मकान है।

तेरी रूह पर, मिट्टी का परिधान है,
मिट्टी होना है तो कैसा अभियान है।

परिवार

पास बैठ कर खाना खिलाना, तुम्हें बात-बात पर समझाना
नहीं मानो तो उसका रूठ जाना, पल भर में मान जाना
माँ को भी 'आई लव यू' कहना।

तुमसे बात कम करते हैं, हर जरूरत पूरी करते हैं
तुम्हें नालायक कहते हैं, पर प्यार बहुत करते हैं
पिता को भी 'आई लव यू' कहना।

बात-बात पर चिढ़ाती है, हाथ पर मेरे राखी बाँधती है
चॉकलेट खाती है, रूठ जाऊँ तो मनाती है
बहन को भी 'आई लव यू' कहना।

भाई की बाइक ले जाना, मोहल्ले में धाक जमाना
आप मेरी जान हैं, कहकर भाई से हर बात मनवाना
भाई को भी 'आई लव यू' कहना।

बाजार ले जाती है, सब्जी का बैग उठवाती है
यह अभी छोटा है, कहकर सब को समझाती है
भाभी को भी 'आई लव यू' कहना।

सब से छोटी मेरी जान है, परियों सी मुस्कान है
खुश रहने का वरदान है, सेजल उसका नाम है
भतीजी को भी 'आई लव यू' कहना।

सबसे छोटे हो सबकी इज्जत करना
परिवार मिला है रब का शुक्र करना
एक 'आई लव यू' खुद को भी कहना।

विक्रम सिंह
प्रवर श्रेणी लिपिक

प्रेरक प्रसंग

1

गुरु ने शिष्य के हाथ में तेल का कटोरा पकड़ा दिया और कहा, यह तुम्हारी परीक्षा है । इसे पकड़ कर पूरे उपवन में घूमो और मुझे बताओ कि वहाँ खिला हुआ सबसे सुंदर फूल कौनसा है । ध्यान रखना इस कटोरे से एक भी बूँद तेल न टपके । शिष्य ने पूरे उपवन के कई चक्कर लगाए । जब वह वापस आया तो गुरु ने पूछा अब बताओ सबसे सुंदर फूल का रंग क्या है । शिष्य ने कहा- मैं सच कहता हूँ, उपवन के फूलों को तो मैं ठीक से देख ही नहीं सका । मेरा पूरा ध्यान इसी में रहा कि तेल की एक भी बूँद कहीं गिर न जाए । गुरु ने कहा - यह तुम्हारी परीक्षा नहीं थी, यह तुम्हारी दीक्षा भी थी । जो व्यक्ति अपने साथ अनावश्यक भार लेकर चलता है वह कुछ भी सीख-समझ नहीं पाता ।

2

स्वामी विवेकानन्द से एक जिज्ञासु से पूछा "संसार में माँ की महानता को क्यों इतना महत्व दिया जाता है ? स्वामी जी मुस्कुरा कर बोले "पहले तुम पाँच सेर का एक पत्थर कपड़े में लपेट कर अपने कमर में बाँधो और चौबीस घंटे के बाद आना, तब मैं तुम्हारे प्रश्न का उत्तर दूंगा । उस व्यक्ति ने ऐसा ही किया पर कुछ ही घंटो के बाद वह स्वामी जी के पास पहुंचा और बोला, 'स्वामी जी आपने एक प्रश्न पूछने पर इतनी बड़ी सजा क्यों दी ।

स्वामी जी बोले "इस पत्थर का बोझ तुमसे चंद घंटे भी नही सहा गया और माँ नौ महीने तक शिशु का बोझ उठाती है । इस बोझ के साथ वह काम भी करती है और कभी विचलित भी नहीं होती है । माँ से अधिक सहनशील कोई नहीं हो सकता । इसलिए माँ सबसे महान है ।

3

ऑलिवर क्रोमवेल अपनी वीरता के लिए बेहद प्रसिद्ध थे । एक प्रसिद्ध चित्रकार उनका चित्र बनाने लगा तो उसे हिचक हुई क्योंकि क्रोमवेल वीर तो थे लेकिन बेहद कुरूप थे । उनके चेहरे का एक मस्सा उनकी कुरूपता को और बढ़ाता था । उसने वह मस्सा नहीं बनाया जिससे क्रोमवेल कुरूप न लगकर आकर्षक लग रहे थे । चित्र देख कर क्रोमवेल बोले "तुम्हारी कलाकृति तो बहुत सुंदर है किन्तु यह मेरा चित्र नहीं है ।" चित्रकार ने दूसरा चित्र बनाया । इस बार उसने मस्से को भी चेहरे पर दिखाया । क्रोमवेल ने उस चित्र को देखकर कहा, "हाँ, यह मेरा चित्र है । मुझे अपनी शारीरिक कुरूपता को स्वीकारने में कोई हिचक नहीं ।" हम अपने गुणों को प्रसन्नता से स्वीकार करते हैं तो अवगुणों को भी स्वीकार करना चाहिए ।

4

अगस्त्य मुनि आश्रम से जब टहलने निकले तो उन्होंने देखा कि एक टिटहरी अपनी चोंच में पानी लेकर बाहर निकली और पानी धरती पर उड़ेल दिया । ऐसा वह लगातार करती जा रही थी । मुनि को हैरत हुई । उन्होंने टिटहरी से पूछा, "तुम यह क्या कर रही हो?" टिटहरी ने बताया कि समुद्र मेरे अंडे को बहा ले गया है, मै अंडे को वापस चाहती हूँ । इसलिए समुद्र के पानी को सूखा रही हूँ ।

अगस्त्य मुनि टिटहरी पर हँसे नहीं बल्कि विशाल समुद्र के सामने छोटी सी टिटहरी के साहस से प्रसन्न हुए । उन्होंने टिटहरी की मदद की सोची और अंजुली में पूरे समुद्र को पी लिया । टिटहरी को उसका अंडा वापस मिल गया ।

मदद भी उन्हीं को मिलती है जो कुछ हासिल करने का साहस दिखाते हैं ।

5

बहेलिए के जाल में फँसने के बाद गिद्ध ज़ोर-ज़ोर से चीखने लगा । चारो दिशाओं में गूँजा देने वाली इन चीख़ों पर बहेलिए को हैरत हुई । उसने व्यंग्य कसा - गिद्ध तो दूरदर्शी होते हैं, बहुत दूर तक देख लेते हैं । लेकिन तुम इस मोटे जाल को भी नहीं देख सके । गिद्ध ने जवाब दिया - बुद्धि पर जब लोभ का अधिकार हो जाता है तो कोई भी फंस जाता है । मैं सारा जीवन मांस के टुकड़े के पीछे भागता रहा हूँ, इसके अलावा मैंने कुछ भी नहीं देखा । यह वजह है कि जाल भी मुझे नहीं दिखाई दिया । अब इस लालच का फल भी मुझे ही भुगतना है । बहेलिए को यह सुनकर लगा कि जिसे वह शिकार समझ रहा है वह तो उसे ज्ञान देने की क्षमता रखता है । उसने गिद्ध को तुरंत उड़ा दिया ।

रजनीश कुमार राजन
सहायक

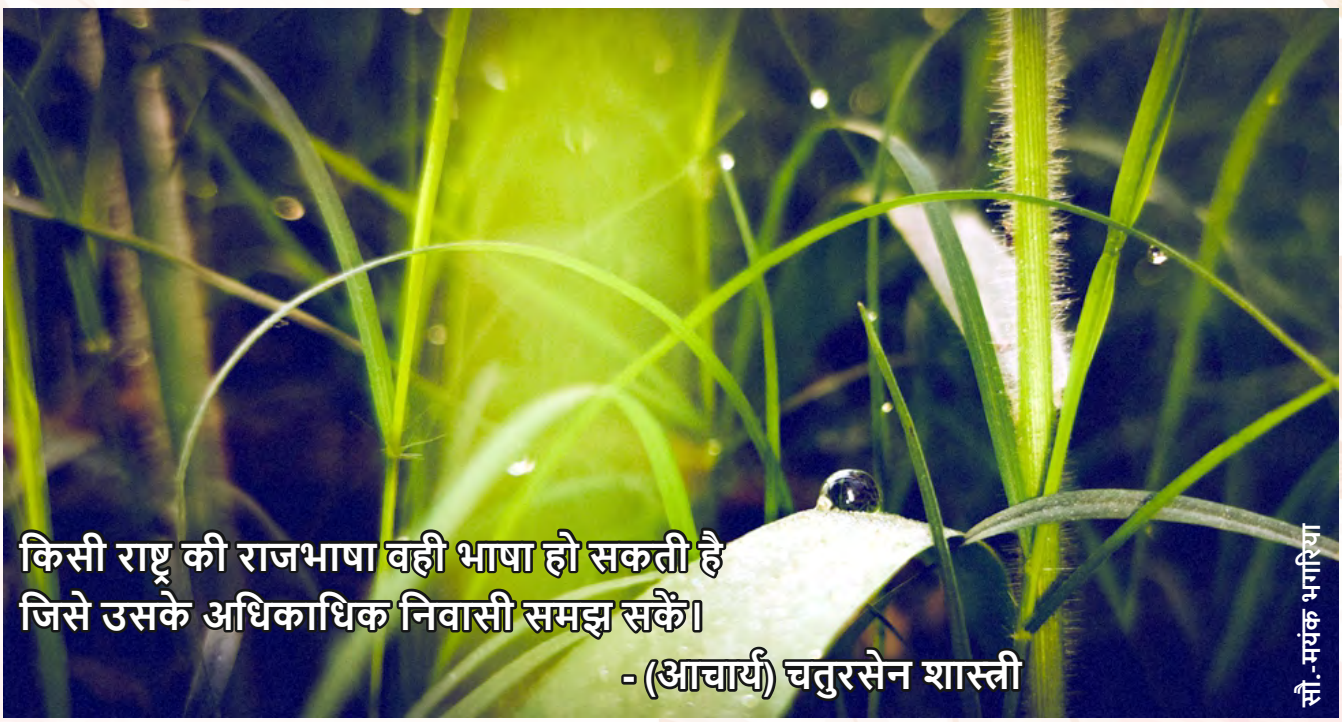

राजभाषा हिन्दी

वो संग्राम हमारा पहला था
जिसे देख फिरंगी दहला था।
हिन्दी ने ऐसा काम किया
समझो नहले पे दहला था।।

ज्यों-ज्यों बढ़ा संग्राम हमारा
त्यों-त्यों बढ़ा नाम हमारा।
हिन्दी ने जन-जन में फैलाया
आजादी का पैगाम हमारा।।

अंग्रेजी हुकूमत के लिए जो आँधी था
जिसका सत्याग्रह दांडी था।
जिसने कहा राष्ट्रभाषा हो हिन्दी
वह गुजरात का गांधी था।।

जब सुभाष ने हिन्द फौज से
आजादी का आह्वान किया।
उसने भी हिन्दी भाषा का
तहे-दिल से सम्मान किया।।

यही वो दिन था जिस दिन
सबने हिन्दी का जयकार किया।
राजभाषा हो हमारी हिन्दी
संविधान सभा ने स्वीकार किया।।

गौतम कुमार
सहायक

ये जिंदगी

ज़िंदगी मौत का सामान बन गई है,
खुद अपनी ही रुखसत का इंतजाम बन गई है |

अब कायनात से भी क्या गिले-शिकवे करें हम,
जब ज़िंदगी ही अपने आखिरी सफर पर चल पड़ी है |

पहुंची जब ज़िंदगी मंज़िल पर ये सामान लिए,
जन्नत भी दोज़ख सी लग रही थी |

पीछे मुड़कर देखा तो बचे कुछ
सामान की होली जल रही थी,
मातम के बीच दावतें भी शौक फरमाए जा रही थीं |

कहाँ से चली थी मैं, कहाँ पहुँच गई हूं
ये सोचने लगी है
अपनी ही मौत का यूं तमाशा देख
ज़िंदगी अब हंसने लगी है..
ज़िंदगी अब हंसने लगी है..

प्रीती पिंपल खरे
(धर्मपत्नी श्री अभय पिंपल खरे, सहायक)

अहंकार

अहंकार एक ऐसी वृत्ति है जो बिषधर के समान है । जो मनुष्य अहंकारी होता है वह संसार में अपने आपको अत्यंत महत्वपूर्ण समझता है । ऐसा प्राणी यदि थोड़ी सी भी सफलता प्राप्त कर लेता है तो स्वयं को सर्वश्रेष्ठ समझने लगता है । वह धन-संपत्ति, सौंदर्य, शारीरिक शक्ति, जाति, वंश, वृद्धि, कला, पद-प्रतिष्ठा, तपस्या, सिद्धि तथा उपलब्धियों के आधार पर अपने आपको दूसरों की तुलना में अधिक श्रेष्ठ समझता है । ऐसा मनुष्य अपने जीवन की प्रगति को रोक देता है । वे दूसरे मनुष्य को सम्मान नहीं देते हैं ।

आज ऐसे कई उदाहरण हैं जिसने अपने अहंकार-वश अपना राजपाट तथा खुद को खो दिया । कहा जाता है कि रावण सर्वश्रेष्ठ ज्ञानी तथा बलशाली भी था । परंतु उसके अंदर अहंकार पैदा हो गया । उसके ज्ञान पर अंधेरा छा गया और उसने अहंकारवश सीता माता का अपहरण कर लिया । अंत में भगवान श्री राम के हाथों मारा गया । रावण ने अपने मृत्यु की अंतिम घड़ी में लक्ष्मण को शिक्षा दी कि अहंकार दुनिया की सबसे बुरी चीज है । हम सभी को इसे त्यागना चाहिए और हमेशा खुश रहना चाहिए । दरअसल अहंकार से हमको एक नहीं बल्कि बहुत सारी परेशानियों का सामना करना पड़ता है । अगर आपके अंदर अहंकार आ गया तो उसका नाश होना संभव है क्योंकि दुनिया में कोई अहंकार करने वाला है तो उसको तोड़ने वाला भी इस दुनिया में है । उसकी बुद्धि एकदम नष्ट हो जाती है । इसलिये आप अहंकार से बचकर रहिए क्योंकि जब बुद्धि नष्ट हो जाती है तो इंसान समझ नही पाता है कि क्या सही और क्या गलत है ।

इसी धरती पर भगवान गौतम बुद्ध एवं महावीर स्वामी का जन्म हुआ था । उनका जन्म राजघराने में हुआ था । वे चाहते तो सुखमय जीवन व्यतीत कर सकते थे, परंतु वे ये सब छोड़कर सच्चे ज्ञान की प्राप्ति में निकल गये । उन्हें कठिन तपस्या के बाद ज्ञान की प्राप्ति हुई । इसका सदुपयोग उन्होंने जनकल्याण में किया और अपना सारा ज्ञान लोगों में बाँट दिया, इससे लोगों को मोक्ष की प्राप्ति हुई । रावण और गौतम बुद्ध में यही अंतर है कि आज भी लोग रावण को घमंडी कहते हैं और गौतम बुद्ध को आज भी लोग भगवान मानते हैं । जिस तरह इस दुनिया में न तो रावण रहा और न ही गौतम बुद्ध रहे, रह गई तो उनकी अच्छाई या बुराई ।

मानवजाति की भी आयु सीमित है। एक समय के बाद हम इस दुनिया को छोड़कर चले जाएँगे । साथ में कुछ नही जाये तो किस बात पर अहंकार करें । भगवान ने हमें जितनी भी आयु दी है उतने समय में हम जिस स्थान पर रहें, हमसे जितना भी हो पाये, लोगों की मदद करें । किसी बात का अहंकार न करें ।

आप अपने जीवन में कभी भी छोटे-बड़े का भेदभाव नहीं रखें । जरुरत पड़ने पर आप अपने से नीचे काम कर रहे सहकर्मियों की मदद करें और उनसे भी मदद लें । शायद उनको आपसे से भी बेहतर जानकारी हो । ज्ञान हमेशा बाँटने और प्राप्त करने से ही बढता है ।

राहुल कुमार
सहायक

मेरा गाँव - मेरा देश

मेरे गाँव की बात निराली,
चारो ओर फैली हरियाली |
क्या दृश्य है गाँव का,
आम की ठंडी छाँव का |
क्या सुहाना लगे वातावरण,
झूम उठा है सारा आँगन |
खेतों में नज़र डालूँ तो,
स्वादिष्ट गन्ने पालूँ तो |
जी करता है रस में डूब जाऊं,
एक बार खाया तो फिर से खाऊं |
गेहू की फ़सलें हल्की-हल्की,
हवा में दे रहे झलकी,
कितना मजेदार है यह सब,
जाने का जी नहीं करता अब,
खुशहाली, हरियाली का अनूठा संगम,
बाजे धानों में मीठी सी सरगम,
एक तरफ़ वनों की खुशी देखते नहीं संभलती,
बूंदें जल की एक झरने के रूप में निकलती,
न जाने कितने पेड़ों के मिलन से बना है यह प्रदेश,
ऐसा है मेरा गाँव-मेरा देश |

शैलेश कुमार दास
सहायक

अहिस्ता चल जिंदगी अभी

आहिस्ता चल जिदंगी अभी,
कई कर्ज चुकाना बाकी है,
कुछ दर्द मिटाना बाकी है,
कुछ फर्ज निभाना बाकी है |

रफ्तार में तेरे चलने से,
कुछ रूठ गए कुछ छूट गए,
रूठों को मनाना बाकी है,
रातों को हँसाना बाकी है |

कुछ रिश्ते बनकर टूट गए,
कुछ जुड़ते-जुड़ते छूट गए,
उन टूटे-छूटे रिश्तों के,
जख्मों को मिटाना बाकी है |

कुछ हसरतें अभी अधूरी हैं,
कुछ काम भी और जरुरी हैं,
जीवन की उलझी पहेली को,
पूरा सुलझाना बाकी है |

जब साँसों को थम जाना है,
फिर क्या खोना, क्या पाना है,
पर मन के जिद्दी बच्चे को,
यह बात बताना बाकी है |

आहिस्ता चल जिदंगी अभी,
कई कर्ज चुकाना बाकी है,
कुछ दर्द मिटाना बाकी है,
कुछ फर्ज निभाना बाकी है |

रमेश कुमार
सहायक

जानने योग्य आवश्यक बातें

सदैव पूर्व या दक्षिण की तरफ सिर करके सोना चाहिए । उत्तर-पश्चिम की तरफ सिर करके सोने से आयु क्षीण होती है तथा शरीर में रोग उत्पन्न होते हैं । पूर्व की तरफ सिर करके सोने से विद्या प्राप्त होती है। दक्षिण की तरफ सिर करके सोने से धन तथा आयु की वृद्धि होती है । शास्त्रों में ऐसी बात भी आती है कि अपने घर में पूर्व की तरफ सिर करके, ससुराल में दक्षिण की तरफ सिर करके और विदेश में पश्चिम की तरफ सिर करके सोएँ, पर उत्तर की तरफ सिर करके कभी न सोएँ । मरणासन्न व्यक्ति का सिर उत्तर की तरफ रखना चाहिए और मृत्यु के बाद अन्त्येष्टि संस्कार के समय उसका सिर दक्षिण की तरफ रखना चाहिए ।

धन-संपत्ति की चाह रखने वाले मनुष्य को अन्न, गौ, गुरु, अग्नि और देवता स्थान के ऊपर नहीं सोना चाहिए । तात्पर्य है कि अन्न-भंडार, गौशाला, गुरु-स्थान, रसोई और मंदिर के ऊपर शयन कक्ष नहीं होना चाहिए ।

कुछ वास्तुशास्त्री घर में पत्थर की मूर्तियों अथवा मंदिर का निषेध करते हैं । वास्तव में मूर्ति का निषेध नहीं है, प्रत्युत एक बित्ते से अधिक ऊंची मूर्ति का ही घर में निषेध है । अंगूठे के पर्व (सिरे) से लेकर कनिष्ठिका छोर तक एक बित्ता होता है । एक बित्ते में बारह अंगुल होते हैं । घर में अंगूठे के पर्व से लेकर एक बित्ता परिमाण की ही प्रतिमा होनी चाहिए । पत्थर, काष्ठ, सोना या अन्य धातुओं की मूर्तियों की प्रतिष्ठा देवमंदिर में करनी चाहिए । घर में दो शिवलिंग, तीन गणेश, दो शंख, दो सूर्य-प्रतिमा, तीन देवी-प्रतिमा, दो द्वारका (गोमती) के चन्द्र और दो शालग्राम का पूजन करने से गृहस्वामी को अशांति प्राप्त होती है ।

भोजन सदा पूर्व अथवा उत्तर की ओर मुख करके करना चाहिए । जो पैर धोये बिना खाता है अथवा जो दक्षिण की ओर मुख करके खाता है अथवा जो सिर पर वस्त्र लपेट कर यानी सिर ढककर खाता है, उसके उस अन्न को सदा प्रेत ही खाते हैं । पूर्व की ओर मुख करके खाने से मनुष्य की आयु बढ़ती है, दक्षिण की ओर मुख करके खाने से प्रेतत्व की प्राप्ति होती है, पश्चिम की ओर मुख करके खाने से मनुष्य रोगी होता है और उत्तर की ओर मुख करके खाने से आयु तथा धन की प्राप्ति होती है । ये सब बातें विभिन्न पुराणों में उल्लिखित हैं, अतः स्वीकार करने योग्य हैं ।

ज्यो.पं.रंगलाल शास्त्री

(लेखक श्री अमित इन्दौरिया, व.अनु.अधिकारी के दादाजी हैं एवं ख्यातिप्राप्त विद्वान हैं)

पर्यावरण चेतना से अब जागे हिंदुस्तान

जल-जंगल-जमीन की रक्षा, हो अपना अभियान,
पर्यावरण चेतना से अब जागे हिंदुस्तान।
वायु विषैली, जल जहरीला, वातावरण में बेचैनी,
ध्वनि प्रदूषण ने है सारी, सुख-शान्ति अपनी छीनी,
मिट्टी-पानी-हवा यही तो, कुदरत के वरदान।
प्रकृति माँ देती जितना मांगो, उससे भी ज़्यादा,
संसाधन का अनुचित दोहन, तेरा गलत इरादा,
बढ़ता लालच कर देगा, इस धरती को सुनसान।
गलते पर्वत, धँसती धरती और धधकती ज्वाला,
हुआ क्षरण ओज़ोन परत का, कैसा गड़बड़झाला,
असंतुलित विकास देख है, कुदरत भी हैरान।
फूल-पत्तियाँ, पशु-पक्षी और हरे-भरे ये पेड़,
सच्चे मित्र यही अपने हैं, इनको मत तू छेड़,
सदियों से है जुड़ी हुई, इनसे तेरी पहचान।
नदी-सरोवर-कुएँ-बावड़ी-नहरें-सागर-झीलें,
बाग-बगीचों के संग आओ, मिलकर जीवन जी लें,
लहलहाएँ-मुस्काएँ फिर, मैदान-खेत-खलिहान।
पर्यावरण चेतना से अब जागे हिंदुस्तान।
पर्यावरण चेतना से अब जागे हिंदुस्तान।

प्रमोद कुमार मीना
प्रवर श्रेणी लिपिक

अहसास

शहर की ये हवा अपनों का प्यार ले गई,
माँ की ख्वाहिशों को गहराई में बहा ले गई,
पिता के अरमानों को चूर-चूर कर गई,
नानी तू कहती थी ना बेटा छुट्टियों में फिर आना,
मामा भी लाते थे ना खूब सारे खिलौने मेरे,
जब आती थी राखी तो सब हिल-मिल जाते थे
एक झूले में तीन-तीन झूल जाते थे
होली के त्योहारों पर हम-तुम रंग लगाते थे,
रंग न मिले सही पर प्यार से बहलाते थे,
क्या याद है वो सर्दियाँ जब सर्दी जोरों की होती थी,
और वो रातें अँधेरी होती थीं
घर किसी और का, पर महफ़िलें हमारी होती थीं,
परायों की महफिलों में अपने से हो जाते थे
और सर्दियों के मौसम में यूँ ही सो जाते थे,
नहीं चाहिए ऐसी दौलत जो,
माँ-बाप और अपनत्व को छीन ले,
परिवार के रिश्तों को तराजू से तौल दें,
हर चीज़ मिली इस शहर में
यश मिला, सम्मान मिला, वैभव मिला, हर मान मिला,
पर सच कहूँ मेरी 'माँ'
जब तूने गले लगाया ना, तब तू मेरे पास थी
जैसे तेरे चरित्र ने सम्पूर्ण लालसाओं को पूर्ण कर दिया हो
हाँ, माँ तू वो अहसास थी | हाँ, माँ तू वो अहसास थी |

यश बैसोया
प्रवर श्रेणी लिपिक

पिता-परमेश्वर

पिता प्यारे है सबके,
पूरी करते मुरादें सबकी,
पिता बनकर तो कभी दोस्त बनकर,
पर अपनी करते एक भी नहीं,
बीमारी हो या शादी, या हो कोई त्योहार,
दिन महीने साल रहते हरदम तैयार,
कभी थकते नहीं कभी रुकते नहीं,
कभी कुछ कहते नहीं कभी रोते नहीं,
ना ही हमसे मांगते कभी प्यार,
पूरी करते-करते हमारी मांग,
बीता देते हैं जीवन की हर एक शाम,
ना कभी लिए विराम ना कभी किये आराम,
हर गम अपना भुला देते हैं,
हमें हर दिन खुश देखकर,
इसलिए तो कहते हैं पिता नहीं परमेश्वर हैं
हमारे जीवन के सर्वेश्वर हैं,
कर लो अपने पिता से प्यार,
नहीं तो जीवन है बेकार |
****

कोई कहे पिताजी कोई कहे बाबूजी,
तो कोई कहे पापाजी तो कोई कहे डैडीजी,
दो अक्षर का यह प्यारा नाम,
हर कोई लेता सुबह और शाम,
दो अक्षर का यह संबोधन,
हर कार्य का करते हैं कुशल प्रबंधन,
कब, कहाँ और क्या है करना,
परिवार मानता है इनका हर कहना,
हर परिवार एक अभ्यर्थी है, ये उस परिवार के सारथी हैं
हम सब सवार हैं पिता के रथ पर,
पर कभी रुकने नहीं दिया जीवन के हर पथ पर,
हमें सीचते हैं तन, मन और धन से,
पर कभी घमंड नहीं किया अपने इस कर्म से,
हर परिवार का ये खेवैया है,
तो हर परिवार का ये कृष्ण कन्हैया है,
जिसे देते हैं दिल से आशीष,
उसकी पूरी हो जाती है सारी ख्वाहिश,
इसलिए तो कहता हूँ मान लो इनका हर कहना,
मिल जाएगा संसार का सारा गहना
****

मेरे जन्म के बाद फूले नहीं समाये थे मेरे पापा, हाथ जोड़ धन्यवाद दिए थे प्रभु को मेरे पापा,
खूब झूमे, खूब नाचे, खूब बांटे मिठाई, घर, मोहल्ले, और गाँव से खूब लिए बधाई,
पल-पल देख मुझे तृप्त किये अपने नयन, मै भी मुस्कुराकर चार किये उनके नयन,
जब-जब मैं रोता था, वे विचलित हो जाते थे, तोड़कर अपनी अधूरी नींद, मुझे शांत कराते थे,
निःस्वार्थ इनका प्यार पाकर मैं हुआ चिरायु, मांगते थे रोज प्रभु से इनके होने को दीर्घायु,
दिन महीने साल देख-देख मुझे दिए खूब आशीष, पाकर प्यार इनका मैंने दिए झुका शीश,
है इनका उपकार बहुत मुझ पर, नहीं चुका पाउँगा इनका ऋण जीवन-भर,
मान दिया, सम्मान दिया और दिया एक नाम, हाथ जोड़ प्रभु से मांगू हर जन्म में इनका ही नाम|
****

गुप्तेश्वर प्रसाद
अधीक्षक

झलकियाँ

एसिक दिवस पखवाड़ा का आयोजन

हिन्दी कार्यशाला का आयोजन

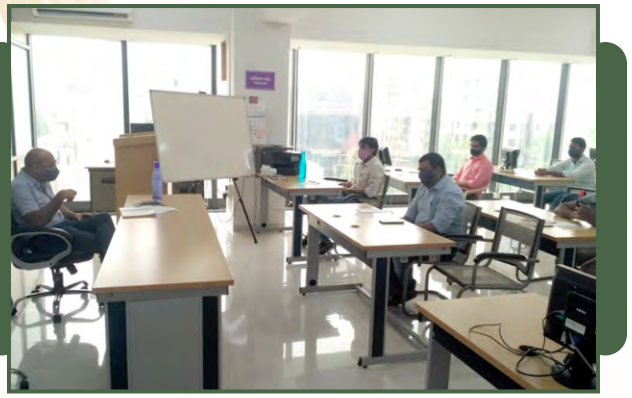

विभागीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक का आयोजन

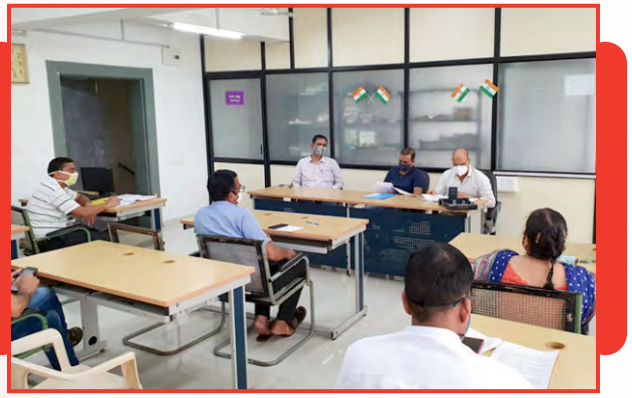

हिन्दी दिवस समारोह (वर्ष 2020)

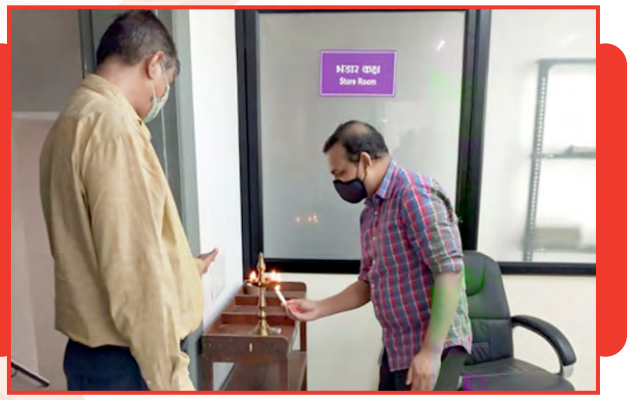

श्री मनोज कुमार, उप निदेशक (प्रभारी)
द्वारा पंचदीप प्रज्ज्वलन

माननीय गृहमंत्री की अपील का वाचन करते हुए
श्री मनीष कुमार, उप निदेशक (राजभाषा प्रभारी)

महानिदेशक महोदया की अपील का
वाचन करते हुए उप निदेशक (प्रभारी)

समारोह में उपस्थित कर्मचारीगण

उप निदेशक (प्रभारी) महोदय द्वारा पुरस्कार वितरण

हिन्दी दिवस समारोह (वर्ष 2020)

उप निदेशक (प्रभारी) महोदय द्वारा पुरस्कार वितरण

मंच संचालन करते हुए
श्री अमित इन्दौरिया, व.अनु.अधिकारी

श्री वासुदेव पारवानी,
उप निदेशक द्वारा संबोधन

श्री मनीष कुमार, उप निदेशक
(राजभाषा प्रभारी) का उद्‌बोधन

मनोज कुमार, उप निदेशक (प्रभारी)
द्वारा अध्यक्षीय संबोधन

गणतंत्र दिवस समारोह का आयोजन

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस का आयोजन

अन्य गतिविधि

श्री वसंत दीक्षित, शाखा प्रबंधक, शा.का.,नवसारी को भारतीय ठेका मजदूर महासंघ द्वारा गैर-कार्यान्वित क्षेत्र 'व्यारा' में आयोजित कार्यक्रम में ईएसआईसी के हितलाभों पर व्याख्यान हेतु आमंत्रित किया गया एवं उन्हें सम्मानित भी किया गया |

राजभाषा संबंधी लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु सुझाव

- राजभाषा अधिनियम, 1963 की धारा 3(3) के अंतर्गत सभी 14 दस्तावेज (सामान्य आदेश, संकल्प, परिपत्र, नियम, अधिसूचना, प्रेस विज्ञप्ति, संविदा, करार, निविदा सूचना, निविदा प्रारूप, अनुज्ञप्ति (लाइसेंस), अनुज्ञा पत्र, संसद के समक्ष रखे जाने वाले प्रशासनिक और अन्य प्रतिवेदन तथा प्रशासनिक या अन्य रिपोर्टें द्विभाषी रूप में जारी किए जाएँ |
- राजभाषा नियम 1976 के नियम 5 के तहत हिन्दी में प्राप्त सभी पत्रों के उत्तर अथवा पावती अनिवार्य रूप से हिन्दी में ही भेजें |
- हिन्दी में हस्ताक्षरित अंग्रेजी पत्रों के उत्तर हिन्दी में ही दें |
- उपस्थिति रजिस्टर में हस्ताक्षर हिन्दी में ही करें |
- छुट्टी हेतु आवेदन सहित अन्य सभी आवेदन एवं अभ्यावेदन पत्र हिन्दी में ही दें |
- केवल द्विभाषी (हिन्दी-अंग्रेजी) रबर मोहरों का ही प्रयोग करें |
- लिफाफों पर पते हिन्दी में लिखें |
- चैक हिन्दी में ही जारी करें |
- सभी फाइलों एवं रजिस्टरों के शीर्षनाम द्विभाषी (हिन्दी-अंग्रेजी) रूप में होने चाहिए | इनमें हिन्दी, अंग्रेजी के ऊपर होनी चाहिए | यह भी ध्यान रखा जाए कि हिन्दी के अक्षर अंग्रेजी के अक्षरों से छोटे न हो।
- सभी रजिस्टरों में प्रविष्टियाँ हिन्दी में ही करें |
- सभी नामपट्ट एवं साईनबोर्ड द्विभाषी अथवा आवश्यक हो तो त्रिभाषी रूप में होने चाहिएँ |
- सेवा-पुस्तिकाओं के शीर्षनाम द्विभाषी (हिन्दी-अंग्रेजी) रूप में होने चाहिए | इनमें प्रविष्टियाँ हिन्दी में की जानी चाहिए |
- विज्ञापनों पर व्यय की जाने वाली कुल राशि का 50 प्रतिशत हिन्दी विज्ञापनों पर खर्च किया जाना चाहिए |
- पुस्तकों की खरीद पर किए जाने वाले कुल व्यय का 50 प्रतिशत हिन्दी पुस्तकों की खरीद पर किया जाना चाहिए |
- ई-मेल में हिन्दी का प्रयोग करें |
- द्विभाषिक रूप से मुद्रित पत्रों में केवल हिन्दी भाग भरा जाए |
- निगम मुख्यालय द्वारा ऑनलाइन उपलब्ध कराए गए हिन्दी प्रारुपों का अधिकतम उपयोग किया जाना चाहिए ।

संक. राजभाषा शाखा

हिन्दी-गुजराती संवाद

अंदर आइए - અંદર આવો

कृपया बैठिए - મહેરબાની કરીને બેસો

आप कैसे हैं - તમે કેમ છો

क्या हाल-चाल है - કેવું ચાલે છે

क्या आप पानी लेंगे - શું તમે પાણી પીશો ?

आपका नाम क्या है - તમારું નામ શું છે

मेरा नाम सचिन है - મારુ નામ સચિન છે

मेरे पिता सरकारी कार्यालय में कार्य करते हैं - મારા પિતાજી/પપ્પા સરકારી કચેરીમાં નોકરી કરે છે

आप क्या काम करते हैं - તમે શું કામ કરો છો

आपके परिवार में कितने सदस्य हैं - તમારા પરિવારમાં કેટલા લોકો છે

यह मेरा भाई / मेरी बहन है - આ મારો ભાઈ/ મારી બહેન છે

कृपया नाश्ता कीजिए - મહેરબાની કરીને નાસ્તા કરો

जन्मदिन की हार्दिक शुभकामनाएँ - જન્મદિવસની હાર્દિક શુભકામનાઓ

क्या तुमने खाना खाया - શું તમે જમી લીધું

जल्दी बोलो - જલ્દી બોલો

आपको भोजन में क्या पसंद है - તમને જમવાંમાં શું પસંદ/ભાવે છે

मुझे मिठाई बहुत पसंद है - મને મીઠાઈ બહુજ ભાવે છે

बहुत खुश नजर आ रहे हो - બહુજ ખુશ લાગો છો

टेलीविजन पर अच्छा कार्यक्रम आ रहा है - ટીવીમાં સારો કાર્યક્રમ આવી રહ્યો છે

मुझे गुजराती गीत सुनना पसंद है - મને ગુજરાતી ગીતો સાંભળવા પસંદ છે

देखो ! कितना सुन्दर पक्षी है - જુઓ કેટલું સુંદર પક્ષી છે

आज मौसम ख़राब है - આજે વાતાવરણ ખરાબ છે

बहुत तेज बरसात हो रही है - બહુ ભારે વરસાદ થઇ રહ્યો છે

मैं आपसे मिल चुका हूँ - હું તમને મળી ચુક્યો છું

आज मैं छुट्टी पर हूँ - આજે હું રજા પર છું

आप बहुत खूबसूरत हैं - તમે ખુબ સુંદર છો

धन्यवाद - આભાર

ठंडी हवा बह रही है - ઠંડો પવન વહી રહ્યો છે

चलिए घूमने चलते हैं - ચાલો ફરવા જઇએ

थोड़ा धीरे चलिए - થોડું ધીરે ચાલો

औषधालय यहाँ से बहुत दूर है - દવાખાનું અહીંથી ઘણું દૂર છે

सिनेमाघर नजदीक ही है - સિનેમાગૃહ નજીક છે

मैं यह जानना चाहता हूँ - હું એ જાણવા માંગુ છું

क्या आज तुम मेरे घर आ सकते हो - શું આજે તમે મારા ઘરે આવી શકો છો

मेरी तबीयत आज ठीक नहीं है - મારી તબિયત આજે ઠીક નથી

आप मुम्बई कब जा रहे हैं - તમે મુંબઈ ક્યારે જઇ રહ્યા છો

10 बज गये हैं - 10 વાગી ગયા છે

कार्यालय में समय पर पहुँचना आवश्यक है - કચેરીમાં સમયસર પહોંચવું જરૂરી છે

बैठक कब और कितने बजे है - મિટિંગ ક્યારે અને કેટલા વાગ્યે છે

मुझे देर हो रही है - મને મોડું થઇ રહ્યું છે

कल फिर मिलेंगे - કાલે ફરી મળીશું

सौजन्य - विमलेशकुमार ठक्कर

सहायक

हिन्दी वह भाषा है जो विभिन्न मातृ-भाषाओं रूपी फूलों को पिरोकर भारत माता के लिए सुन्दर हार का सृजन करेगी। - डॉ.जाकिर हुसैन

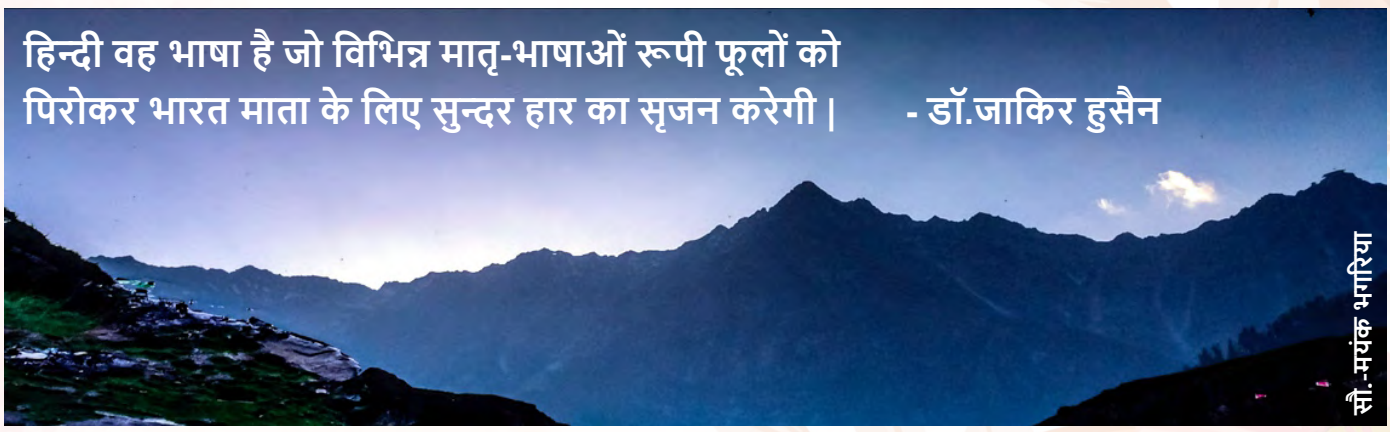

सूरत में क.रा.बी.योजना : एक नजर

कर्मचारी राज्य बीमा अधिनियम 1948, बीमाकृत व्यक्तियों को उनकी आवश्यकता एवं नियमानुसार चिकित्सा अधिकारियों के माध्यम से चिकित्सा देखभाल एवं नकद हितलाभ जैसे बीमारी हितलाभ, मातृत्व हितलाभ, आश्रितजन हितलाभ, स्थायी एवं अस्थायी अपंगता हितलाभ उपलब्ध कराता है | यह अधिनियम, रोजगार चोट के कारण हुई अर्जन क्षमता की हानि होने पर स्थायी शारीरिक अपंगता हितलाभ के अलावा बीमाकृत व्यक्ति की मृत्यु होने की स्थिति में अंत्येष्टि खर्च भी प्रदान करता है | इसके अलावा यह वृद्धावस्था चिकित्सा देखभाल एवं राजीव गाँधी श्रमिक कल्याण योजना भी उपलब्ध कराता है |

कर्मचारी राज्य बीमा योजना को गुजरात राज्य में दिनांक 04 अक्टूबर 1964 को लागू किया गया था | प्रथम चरण में यह योजना अहमदाबाद शहर एवं इसके उपनगरों में लागू की गई थी तथा बाद में इसे सूरत सहित राज्य के अधिकतर केंद्रों तक विस्तृत कर दिया गया | प्रशासनिक सुविधा को ध्यान में रखते हुए दिनांक 13 नवम्बर, 2000 को उप क्षेत्रीय कार्यालय, सूरत अस्तित्व में लाया गया | सूरत में इसके अधीनस्थ 03 शाखा कार्यालय- सलाबतपुरा, लाल दरवाजा, नवसारी एवं 01 औषधालय सह शाखा कार्यालय- वापी भी हैं | यह योजना दिनांक 17.01.2011 से सभी इकाइयों, जहाँ 10 या इससे अधिक कर्मचारी कार्यरत हैं, के लिए लागू है |

सूरत में क.रा.बी.योजना

(दिनांक 31.03.2020 तक के आंकड़ों के आधार पर)

क्र.सं.	मद	वर्ष 2019-20
1	शाखा कार्यालयों की संख्या	03
2	औषधालय सह शाखा कार्यालयों की संख्या	01
3	बीमाकृत व्यक्तियों की कुल संख्या (बीमाकृत महिला सहित)	4,16,610
4	कर्मचारियों की कुल संख्या	3,81,150
5	नियोक्ताओं की कुल संख्या	12,844
6	क्षेत्र की राजस्व आय (करोड़ों में)	219.80
7	राजस्व वसूली की राशि (करोड़ों में)	2.69
8	नकद हितलाभों पर व्यय (करोड़ों में)	12.50

खेल-कूद में उपलब्धि

श्री भाविन एन. देसाई, सहायक, उप क्षेत्रीय कार्यालय, सूरत ने दिनांक 28 मार्च, 2019 से 01 अप्रैल, 2019 तक हिंदुस्तान पेट्रोलियम द्वारा चंडीगढ़ में आयोजित 'अखिल भारतीय सार्वजनिक खेल-कूद प्रमोशन बोर्ड टेबल-टेनिस प्रतियोगिता' में निगम का प्रतिनिधित्व किया | उनकी टीम ने इस प्रतियोगिता में कांस्य पदक प्राप्त किया | श्री भाविन ने इस प्रतियोगिता में उत्कृष्ट प्रदर्शन किया |

मूल हिन्दी टिप्पण-आलेखन प्रोत्साहन योजना, वित्त-वर्ष 2019-20 के अंतर्गत पुरस्कृत कार्मिकों की सूची

क्र.सं.	नाम	पदनाम	पुरस्कार राशि (रू.में)
I	प्रथम पुरस्कार (2)		
1	श्रीमती दिपाली असनानी	सहायक	5000/-
2	श्री पंकज कुमार	सहायक	5000/-
II	द्वितीय पुरस्कार (3)		
3	श्री हरकेश मीना	प्रवर श्रेणी लिपिक	3000/-
4	श्री शैलेश कुमार दास	सहायक	3000/-
5	श्री विमलेश कुमार ठक्कर	सहायक	3000/-
III	तृतीय पुरस्कार (5)		
6	श्री गोविंद राम	प्रवर श्रेणी लिपिक	2000/-
7	श्री विजय कुमार	सहायक	2000/-
8	श्री रणविजय कुमार	सहायक	2000/-
9	श्री सुमित कुमार वर्णवाल	सहायक	2000/-
10	श्री नरेश कुमार मीना	प्रवर श्रेणी लिपिक	2000/-

राजभाषा पखवाड़ा, वर्ष 2020 के दौरान आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं में पुरस्कृत कार्मिकों का विवरण

1	**हिन्दी निबंध प्रतियोगिता**			
		स्थान	नाम/पदनाम	पुरस्कार राशि (रू. में)
	(क) हिन्दी भाषी वर्ग	प्रथम	श्रीमती नीलम कुमारी, सहायक	1800/–
		द्वितीय	श्री नरेश कुमार मीना, प्रवर श्रेणी लिपिक	1500/–
		तृतीय	श्री आशीष चक्रवर्ती, प्रवर श्रेणी लिपिक	1200/–
		प्रोत्साहन-I	श्री राहुल कुमार, प्रवर श्रेणी लिपिक	500/–
		प्रोत्साहन-II	श्री हेमाराम, प्रवर श्रेणी लिपिक	500/–
	(ख) हिन्दीतर भाषी वर्ग	प्रथम	श्री आनंद देवराजन पिल्लई, सहायक	1800/–
2	**हिन्दी वाक् प्रतियोगिता**			
	(क) हिन्दी-भाषी वर्ग	प्रथम	श्री शैलेश कुमार दास, सहायक	1800/–
		द्वितीय	श्री हेमाराम, प्रवर श्रेणी लिपिक	1500/–
		तृतीय	श्री पंकज कुमार, सहायक	1200/–
		प्रोत्साहन-I	श्री रमेश कुमार, प्रवर श्रेणी लिपिक	500/–
		प्रोत्साहन-II	श्री राहुल कुमार, प्रवर श्रेणी लिपिक	500/–
	(ख) हिन्दीतर भाषी वर्ग	प्रथम	श्री आनंद देवराजन पिल्लई, सहायक	1800/–
3	**हिन्दी टिप्पण-आलेखन प्रतियोगिता**			
	(क) हिन्दी-भाषी वर्ग	प्रथम	श्री विजय कुमार, सहायक	1800/–
		द्वितीय	श्री हेमाराम, प्रवर श्रेणी लिपिक	1500/–
		तृतीय	श्री पंकज कुमार, सहायक	1200/–
		प्रोत्साहन-I	श्री शैलेश कुमार दास, सहायक	500/–
		प्रोत्साहन-II	श्रीमती नीलम कुमारी, सहायक	500/–
	(ख) हिन्दीतर भाषी वर्ग	प्रथम	श्री आनंद देवराजन पिल्लई, सहायक	1800/–
4	**राजभाषा ज्ञान प्रतियोगिता**			
	(क) हिन्दी-भाषी वर्ग	प्रथम	श्री पंकज कुमार, सहायक	1800/–
		द्वितीय	श्री गौतम कुमार, प्रवर श्रेणी लिपिक	1500/–
		तृतीय	श्री हेमाराम, प्रवर श्रेणी लिपिक	1200/–
		प्रोत्साहन-I	श्री रविन्द्र कुमार, सहायक	500/–
		प्रोत्साहन-II	श्रीमती नीलम कुमारी, सहायक	500/–
	(ख) हिन्दीतर भाषी वर्ग	प्रथम	श्री आनंद देवराजन पिल्लई, सहायक	1800/–

कैमरे की नजर से..

मयंक भगरिया
सामाजिक सुरक्षा अधिकारी

आपका पत्र मिला...

आपके कार्यालय की गृह पत्रिका "सूरत तरंग" का तृतीयांक प्राप्त हुआ | धन्यवाद |

यह पत्रिका कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों की साहित्यिक चेतना को आकार देती है | हमेशा की तरह पत्रिका का आवरण पृष्ठ, साजसज्जा, निहित रचनाएँ, लेख, कविताएं अत्यंत रोचक, उपयोगी और उत्कृष्ट हैं | एक हीरे की कहानी, डॉ. गंगा प्रसाद शर्मा, "गुणशेखर" से भेंट वार्ता, पर्यटन, अपना बिहार, गृहणी, स्लिप डिस्क-कारण और निवारण, अनमोल रिश्ते, रानी बिटिया, प्रेम और नफरत आदि रचनाएँ विशेष रूप से पठनीय हैं | पत्रिका में विभिन्न कार्यक्रमों की झलक कार्मिकों की क्रियाशीलता की परिचायक है |

पत्रिका के प्रकाशन से जुड़े सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को हार्दिक बधाई तथा आगामी अंक के लिए शुभकामनाएँ |

श्री सौंयेन्दु विश्वास
क्षेत्रीय निदेशक
क्षेत्रीय कार्यालय,फरीदाबाद

• • •

आपके कार्यालय की गृह पत्रिका "सूरत तरंग" के तृतीयांक की प्राप्ति हुई, हार्दिक आभार |

पत्रिका का बाह्य आवरण अत्यंत ही आकर्षक एवं सादगी से ओतप्रोत है | पत्रिका में प्रकाशित रचनाएँ जीवन के लगभग सम्पूर्ण रंगों से रंगी हैं | इतिहास, राजनीति, समाज, तकनीक, विज्ञान, पर्यावरण, आदि के साथ-साथ संस्मरण व अनुभवों आदि रंगो को भी कविता, लेख, एवं रचनाओं की तूलिका के माध्यम से सभी रचनाकारों ने बड़े ही मोहक ढंग से 'सूरत तरंग' रूपी चित्रफलक पर अंकित किया है, जिसके लिए सभी रचनाकारों को साधुवाद |

उत्तम रचनाओं के संकलन, मोहक रूप में शोभान्वित करने एवं पत्रिका के अनवरत प्रकाशन के लिए संपादक मण्डल को बहुत बधाई | आशा है कि भविष्य में भी 'सूरत तरंग' के सफल प्रकाशन की यात्रा इसी भांति चलती रहेगी |

आगामी अंक के लिए शुभकामनाएं |

रीना हीरा
सहायक निदेशक (प्रभारी राजभाषा)
क्षेत्रीय कार्यालय, अहमदाबाद

• • •

आपके कार्यालय की गृहपत्रिका 'सूरत तरंग' का अंक -3 प्राप्त हुआ | हार्दिक धन्यवाद |

पत्रिका में छपी रचनाएँ रोचक एवं पठनीय हैं | पत्रिका में छपी रचनाएं विशेषकर श्री दिनेश कुमार मीना की रचना "भारत-पाकिस्तान युद्ध का गवाह बना एक मंदिर" तथ्यपूर्ण एवं रोचक है एवं श्री महेन्द्र कुशवाह द्वारा रचित पर्यावरण संरक्षण से संबन्धित समस्याओं एवं उपायों के बारे में हमें जानकारी प्रदान करता है | पत्रिका का ऐतिहासिक विषयक मुखपृष्ठ उसे मनोरम एवं आकर्षक बनाता है | कार्यालय के विभिन्न गतिविधियों के साक्षी स्वरूप सम्मिलित छायाचित्रों ने पत्रिका को और भी रोचक बनाया है |

जानकी सिंह
उप निदेशक
उप क्षेत्रीय कार्यालय, बैरकपुर

• • •

आपका पत्र मिला...

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिन्दी गृह पत्रिका सूरत तरंग के अंक 03 की प्रति प्राप्त हुई, पत्रिका अग्रेषण के लिए हार्दिक आभार |

पत्रिका का मुख-पृष्ठ अत्यधिक आकर्षक है | पत्रिका में प्रकाशित समस्त आलेख अच्छे एवं उच्च कोटि के हैं | पत्रिका मे प्रकाशित लेख एवं रचनाएँ उत्कृष्ट हैं |

एक हीरे की कहानी, पर्यटन अपना बिहार, भारत पाकिस्तान युद्ध का गवाह बना एक मंदिर, श्री बिनय कुमार शुक्ल की आपबीती, स्लिप डिस्क कारण एवं निवारण, सोशल मीडिया के गलियारे से, देवनागरी बनाम रोमन लिपि नामक लेख विशेष रूप से ज्ञानवर्धक एवं पठनीय होने के साथ-साथ रोचक भी थे |

विभिन्न गतिविधियों के छायाचित्रों से पत्रिका और भी रोचक एवं उपयोगी बनी है | पत्रिका प्रकाशन के पुनीत कार्य से जुड़े सभी कार्मिकों को उनके उत्कृष्ट कार्य के लिए हार्दिक बधाइयाँ | पत्रिका के निरंतर प्रकाशन के लिए शुभकामनाएँ एवं पत्रिका के आगामी अंक की प्रतीक्षा रहेगी |

प्रियरंजन सिन्हा
उप निदेशक (राजभाषा प्रभारी)
क्षेत्रीय कार्यालय, देहरादून (उतराखंड)

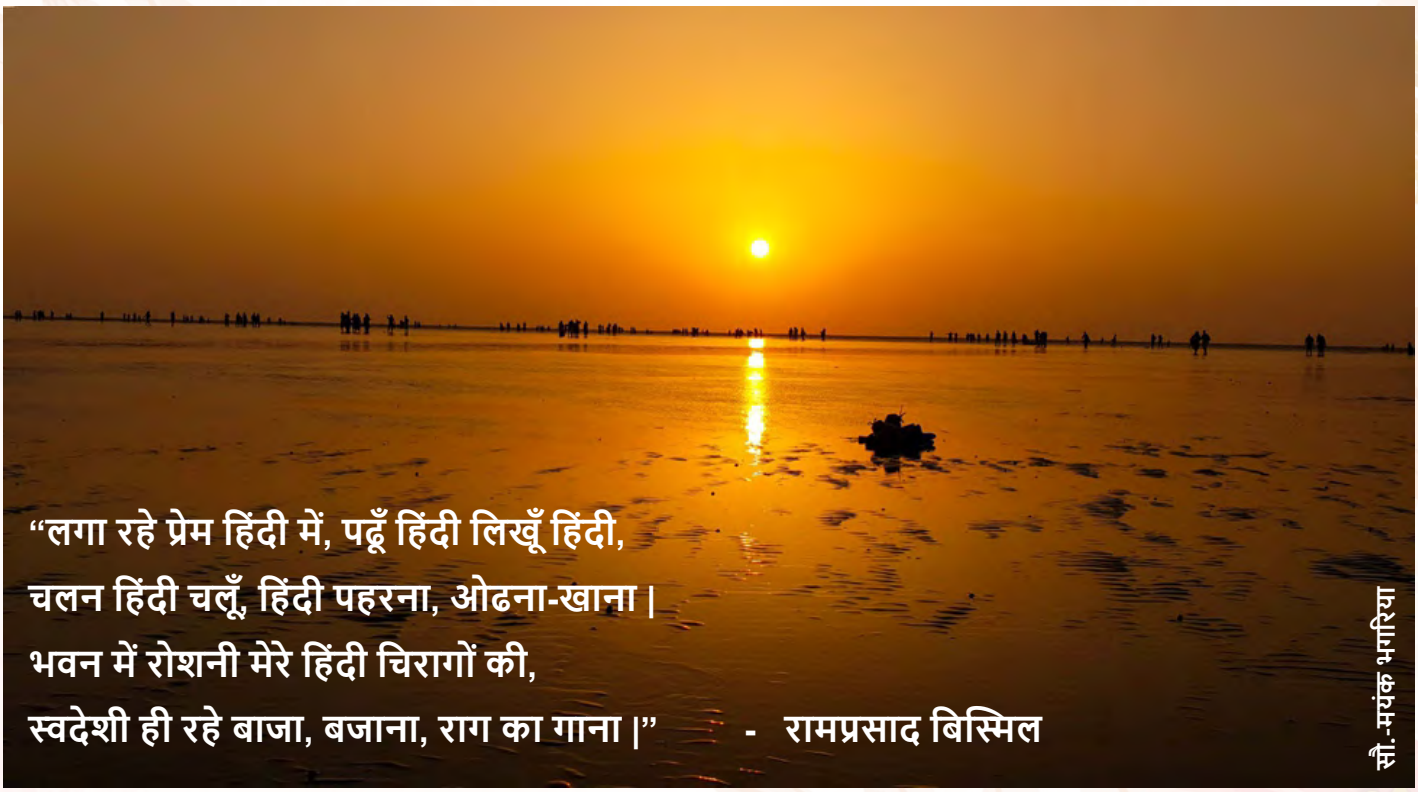

ईएसआईसी कोविड-19 राहत योजना

क.रा.बी. अधिनियम, 1948 के अंतर्गत व्याप्त कर्मचारी की COVID-19 के कारण दुर्भाग्य पूर्ण मृत्यु की परिस्थिति में, मृतक श्रमिक के औसत वेतन का 90% प्रत्येक माह मृतक श्रमिक के पात्र आश्रित परिवार के सदस्यों के बीच वितरित किया जाएगा और इसका भुगतान सीधे आश्रित के बैंक खाते में किया जाएगा | मृतक श्रमिक का पति/पत्नी प्रति वर्ष 120/- रूपये के मामूली योगदान पर चिकित्सा देखरेख प्राप्त कर सकेंगे। यह योजना COVID-19 से ठीक होने के बाद 30 दिनों के भीतर होने वाली COVID-19 से संबंधित मृत्यु को भी कवर करेगी।

जिस कर्मचारी की COVID-19 बीमारी के कारण मृत्यु हुई है, वह COVID-19 रोग के निदान की तारीख से कम से कम तीन महीने पहले ESIC ऑनलाइन पोर्टल पर पंजीकृत होना चाहिए, निदान की तारीख को रोजगार में होना चाहिए और रोग के निदान से ठीक पहले अधिकतम एक वर्ष की अवधि के दौरान उसके लिए कम से कम 70 दिन के अंशदान का भुगतान होना चाहिए/देय होना चाहिए ।

राहत के लिए दावा किसी भी नजदीकी ESIC शाखा कार्यालय के शाखा प्रबंधक के पास COVID-19 पॉजिटिव रिपोर्ट और कर्मचारी के मृत्यु प्रमाण पत्र के साथ किया जा सकता है। पूर्ण दावा प्रस्तुत करने की तिथि से 15 दिनों के भीतर दावे का निपटान किया जाएगा।

कोविड-19 से ग्रस्त के होने के कारण कर्मचारी के वेतन के नुकसान की क्षतिपूर्ति

क. रा. बीमा अधिनियम, 1948 के अंतर्गत व्याप्त कर्मचारी, चिकित्सक द्वारा प्रमाणित बीमारी के कारण कार्य से अनुपस्थिति की अवस्था में औसत दैनिक मजदूरी के 70% की दैनिक दर पर बीमारी हितलाभ ले सकते है। बीमारी हितलाभ एक वर्ष में अधिकतम 91 दिनों के लिए लिया जा सकता है |

बीमारी हितलाभ लेने के लिए कर्मचारी के संबंध में संदर्भित अंशदान अवधि में न्यूनतम 78 दिनों की अवधि के अंशदान का भुगतान किया होना चाहिए/ देय होना चाहिए |

Medical Practitioner द्वारा जारी चिकित्सा / फिटनेस प्रमाण पत्र के साथ बीमारी हितलाभ के लिए दावा कर्मचारी के नामित शाखा कार्यालय में प्रस्तुत किया जा सकता है। दावे का निपटान 7 दिनों की अवधि में किया जाएगा |

मृतक कर्मचारी के अंतिम संस्कार पर होने वाले खर्च का भुगतान

क. रा. बी. अधिनियम, 1948 के तहत व्याप्त कर्मचारी की दुर्भाग्य पूर्ण मृत्यु की परिस्थिति में, परिवार के सबसे बड़े जीवित सदस्य को या वास्तव में बीमित व्यक्ति का अंतिम संस्कार करने वाले व्यक्ति को 15000/-की राशि का भुगतान किया जाता है।

कर्मचारी मृत्यु वाले दिन क. रा. बी. अधिनियम के अंतर्गत बीमित होना चाहिए|

दावा कर्मचारी के नामित शाखा कार्यालय में प्रस्तुत किया जा सकता है। दावे का निपटान 7 दिनों की अवधि में किया जाएगा |

शिकायत निवारण

क रा बीमा निगम के प्रत्येक राज्य के लोक शिकायत निवारण अधिकारी का विवरण आधिकारिक वेबसाइट **www.esic.nic.in** पर उपलब्ध है | 15 दिनों के भीतर शिकायतों का समाधान किया जाएगा

https://bit.ly/3gjKGeH

श्रम को आर्थिक सम्बल और स्वाभिमान का सम्मान

अटल बीमित व्यक्ति कल्याण योजना

के तहत जरूरतमंद कामगारों को मिलने वाली राहत में बढ़ोतरी

अटल बीमित व्यक्ति कल्याण योजना (ABVKY) के अंतर्गत बढ़े लाभ एवं पात्रता शर्तों में छूट

- राहत दर औसत मज़दूरी का 25% से बढ़ाकर 50% की गई।
- राहत राशि का भुगतान सीधे बीमाकृत व्यक्ति के बैंक खाते में।
- योजना 30 जून, 2022 तक बढ़ाए जाने के साथ इसमें 30 जून, 2022 तक राहत लाभ में बढ़ोतरी एवं शर्तों में छूट दी गई है।
- बीमाकृत व्यक्ति अपना आवेदन ऑनलाइन कर, हार्ड कॉपी में दावा सीधे अपने संबंधित ईएसआईसी शाखा कार्यालय में प्रस्तुत कर सकते हैं।

योजना के अंतर्गत जानकारी एवं राहत हेतु दावा प्रस्तुत करने के लिए, कृपया www.esic.in पर विज़िट करें।

davp 23111/13/0003/2021

श्रम एवं रोज़गार मंत्रालय
भारत सरकार

कर्मचारी राज्य बीमा निगम

अधिक जानकारी के लिए अपने नज़दीकी/संबंधित ईएसआईसी शाखा कार्यालय अथवा टोल फ्री नं. 1800 11 2526 पर संपर्क करें।